Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَۃَ اللّٰہِ لَا تُحۡصُوۡہَا ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ ○

सूरः नहल, आयत : 19

अनुवाद: और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनना चाहो तो उन्हें (पूरी तरह) गिन नहीं सकोगे। निसन्देह अल्लाह बहुत बख़्शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है।

वर्ष- 9
अंक - 44-45
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

27 रबी उल् सानी , 1446 हिज्री कमरी, 31-07 ईखा 1403 हिज्री शम्सी, 31-07 नवंबर 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अच्छी और लाभदायक चीज़ उधार देने का सवाब

{2629} हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: दूध देने वाली ऊँटनी जो ख़ूब दूध देती हो, उसे देना कितना अच्छा तोहफ़ा है, और उसी तरह वह बकरी भी जो ख़ूब दूध देती हो। जो सुबह जाते वक्त एक बर्तन भरकर दूध दे और शाम को वापस आकर भी एक बर्तन भरकर दूध दे।

{2631} हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: अच्छी आदतें चालीस हैं। उनमें से सबसे ऊँची आदत यह है कि दूध देने वाली बकरी को उधार देना। जो भी इन आदतों में से किसी पर भी अमल करता है, और अल्लाह के वादे के सवाब पर यक़ीन रखता है, तो अल्लाह उसे उसकी इस उम्मीद और यक़ीन की वजह से जन्नत में दाख़िल करेगा। हसन कहते थे : हमने दूध देने वाली बकरी के तोहफ़े के अलावा दूसरी आदतों की गिनती की, जैसे सलाम का उत्तर देना, छींकने पर दुआ करना, और रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ हटाना। इस तरह की और भी बातें, लेकिन हम पंद्रह आदतों तक ही गिनती पूरी कर सके।

(सहीह अल्-बुख़ारी, भाग 4, किताब अल्-हिबा)

★ ★ ★

याद रखो ! ख़ुदा पर ईमान बड़ी चीज़ है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

सहाबा का ईमान

मैं फिर सहाबा की हालत को मिसाल के तौर पर पेश करके कहता हूँ कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाकर अपनी अमली हालत में दिखाया कि वह ख़ुदा जो सबसे छुपा हुआ है और जो ग़लत राह पर चलने वाली मख़लूक़ की नज़रों से छिपा और पोशीदा है, उन्होंने अपनी आँखों से, हाँ, आँखों से देख लिया। वरना बताओ तो सही, वह क्या बात थी जिसने उन्हें ज़रा भी परवाह नहीं करने दी कि क़ौम छोड़ी, मुल्क छोड़ा, जायदादें छोड़ीं, दोस्तों और रिश्तेदारों से ताल्लुक़ तोड़ा। वह सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा था, और एक ख़ुदा पर भरोसा करके उन्होंने वह कर दिखाया कि अगर तारीख़ की किताबें पलटी जाएँ तो इंसान हैरत और ताज्जुब से भर जाता है।

ईमान था और सिर्फ़ ईमान था, और कुछ नहीं था। वरना सामने दुनियादारों के मंसूबे, तदबीरें, पूरी कोशिशें और सरगर्मियाँ थीं, पर वे कामयाब नहीं हो सके। उनकी तादाद, जमाअत, दौलत सब कुछ ज़्यादा था, परंतु ईमान नहीं था। और सिर्फ़ ईमान के न होने की वजह से वे तबाह हो गए और कामयाबी की सूरत न देख सके। परंतु सहाबा ने ईमानी ताक़त से सबको जीत लिया।

उन्होंने जब उस शख़्स की आवाज़ सुनी जिसने अनपढ़ होने की हालत में परवरिश पाई थी, परंतु अपने सच्चाई, अमानत और दयानतदारी में मशहूर था, जब उसने कहा कि मैं अल्लाह त'आला की तरफ़ से आया हूँ, यह सुनते ही साथ हो गए और फिर दीवानों की तरह उसके पीछे चल पड़े। मैं फिर कहता हूँ कि वह सिर्फ़ एक ही बात थी जिसने उनकी यह हालत बना दी और वह ईमान था।

याद रखो ! ख़ुदा पर ईमान बड़ी चीज़ है।

शेष पृष्ठ 10 पर

जब भी कोई नबी आता है और वह लोगों की सुधार की तजवीजें (प्रस्ताव) पेश करता है, तो शैतान उसके रास्ते में रुकावटें डालने लगता है। लेकिन इसका नतीजा यह होता है कि मुनाफिक (दिखावे के मुसलमान) और कमज़ोर ईमान वाले लोग अलग हो जाते हैं, और अल्लाह तआला अपने सिलसिले को और भी मजबूत और शानदार बना देता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, सूरः अल्-हज की आयत नंबर : 56 की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं:

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि अल्लाह तआला शैतान को नबियों के रास्ते में रुकावट डालने क्यों देता है? इसका उत्तर देते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हम ऐसा इसलिए करते हैं ताकि इन शैतानी फितनों के द्वारा नबियों की जमाअतें हर तरह की मुनाफिकत और बेईमानी रखने वालों से पाक हो जाएं, और दुश्मनों की अदावत (दुश्मनी) लोगों के सामने ज़ाहिर हो जाए। जब शैतान रुकावटें पैदा करता है, तो जिन लोगों के दिलों में बुराई होती है और जिनके दिल सख़्त होते हैं, वे उसकी बात मान लेते हैं और व्यर्थ मे ईमान वालों पर ज़ुल्म करने लगते हैं। इस तरह कमज़ोर ईमान वालों की कमज़ोरी और दुश्मनों की दुश्मनी दोनों ज़ाहिर हो जाती हैं। साथ ही यह भी पता चल जाता है कि इस्लाम के दुश्मन कितने ज़िद्दी और विरोधी हैं, और यह भी साफ हो जाता है कि जो लोग सच्चे ईमान वाले होते हैं, वे शैतानों की शरारतों से डरते नहीं हैं, बल्कि उनके ईमान में और भी इज़ाफ़ा हो जाता है। और इस तरह अल्लाह तआला उन्हें हिदायत (सही मार्ग) में बढ़ाता चला जाता है।

इस आयत में अल्लाह तआला ने यह कानून वर्णन किया है कि जब भी कोई नबी आता है और वह लोगों की सुधार की तजवीजें पेश करता है, तो शैतान उसके रास्ते में रुकावटें डालता है। लेकिन इसका नतीजा यह होता है कि मुनाफिक और कमज़ोर ईमान वाले लोग अलग हो जाते हैं, और अल्लाह तआला अपने सिलसिले की मज़बूती और उसकी महानता को और भी बढ़ा देता है।

अब इन मानों पर गौर करो और देखो कि यह माने समस्त नबियों पर आम तौर पर और मोहम्मद

शेष पृष्ठ पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जानिसार सहाबा का भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क़ और वफ़ा का अजीब अंदाज़ था।

किस तरह वे अपनी जानें पेश कर रहे थे, और दूसरी तरफ हम देखते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात पर उन सबको तरजीह दे रहे थे।

ऐसे बहादुर कि अपनी जान की कोई परवाह नहीं, बल्कि अहल-ए-मदीना (मदीना के लोगों) की फिक्र थी। इसके लिए अक्सर खुद हर जगह मौजूद रहते थे। और कभी-कभी जब आराम करने के लिए ख़ेमे में तशरीफ लाते भी थे, तो उसका ज़्यादातर हिस्सा अल्लाह के हुज़ूर सजदा करके और दुआएं करते हुए गुज़ारते थे

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के दौरान पेश आने वाले कुछ वाक़यात का वर्णन

लज्ना इमाए इल्लाह और मजलिस अंसारुल्लाह (यू.के) को सालाना इजलास के दौरान दुआओं में वक्त गुज़ारने और दरूद शरीफ का विर्द (जप) करने की तल्कीन (प्रेरणा)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 सितंबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बे में भी वर्णन किया था कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उन हालात का वर्णन फ़रमाया है जो जंग-ए-अहज़ाब में पेश आए। इसकी तफ़सील वर्णन करता हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, 'चूँकि मदीना का एक काफ़ी हिस्सा खंदक से महफ़ूज़ था और दूसरी तरफ़ कुछ पहाड़ी टीले, कुछ पक्के मकान और कुछ बाग़ात इत्यादि थे, इसलिए फौज एकदम हमला नहीं कर सकती थी। इसलिए उन्होंने मशवरा करके यह तजवीज़ दी,' अर्थात काफ़िरों ने, 'कि किसी तरह यहूद का तीसरा क़बीला, जो अब तक मदीना में बाक़ी था और जिसका नाम बनू क़ुरैज़ा था, उसे अपने साथ मिला लिया जाए और इस के द्वारा से मदीना तक पहुँचने का रास्ता खोला जाए।'

इसलिए मशवरे के बाद, हुई इब्न अख़्तब, जो देशनिकाला झेल रहे बनू नज़ीर का सरदार था और जिसकी साज़िशों की वजह से सारा अरब मदीना पर हमला करने के लिए इकट्ठा हुआ था, उसे काफ़िरों की फ़ौज के कमांडर अबू सुफ़ियान ने यह ज़िम्मेदारी दी कि किसी भी तरह बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ शामिल किया जाए। हुई इब्न अख़्तब यहूदियों के क़िलों की तरफ़ गया और उसने बनू क़ुरैज़ा के सरदारों से मिलने की कोशिश की। पहले तो उन्होंने मिलने से इन्कार किया, लेकिन जब उसने उन्हें समझाया कि 'इस समय सारा अरब मुसलमानों को तबाह करने के लिए आया है और यह बस्ती किसी भी सूरत में पूरे अरब का मुक़ाबला नहीं कर सकती। इस समय जो लश्कर मुसलमानों के सामने खड़ा है, उसे लश्कर नहीं बल्कि एक उफ़नता हुआ समंदर कहना चाहिए,' तो इन बातों से उसने बनू क़ुरैज़ा को आख़िरकार ग़द्दारी और मुआहिदा-शिकनी पर राज़ी कर लिया।

फैसला हुआ कि काफ़िरों का लश्कर सामने की तरफ़ से खंदक पार करने की कोशिश करेगा और जब वह खंदक पार करने में कामयाब हो जाएगा, तो बनू क़ुरैज़ा मदीना के उस हिस्से पर हमला करेंगे जहाँ औरतें और बच्चे थे, जो बनू क़ुरैज़ा पर भरोसा करके बिना हिफ़ाज़त के छोड़ दिए गए थे। इस तरह मुसलमानों की मुक़ाबले की ताक़त पूरी तरह से कुचल दी जाएगी। और एक ही समय में मुसलमान मर्द, औरतें, और बच्चे सब मार दिए जाएंगे। यह यक़ीनी था कि अगर इस तदबीर में थोड़ी भी कामयाबी काफ़िरों को मिल जाती, तो मुसलमानों के लिए कोई भी सुरक्षित जगह बाक़ी नहीं रहती।

बनू क़ुरैज़ा मुसलमानों के हलीफ़ (मित्र) थे, और अगर वह खुले तौर पर जंग में शामिल न भी होते, तब भी मुसलमानों को यह उम्मीद थी कि उनकी तरफ़ से होकर मदीना पर कोई हमला नहीं हो सकेगा। इसी वजह से उनकी तरफ़ का हिस्सा पूरी तरह से महफ़ूज़ नहीं रखा गया था। बनू क़ुरैज़ा और काफ़िरों ने इस स्थिति का जायज़ा लेते हुए यह फ़ैसला किया था कि जब बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों के साथ मिल गए, तो वह खुले तौर पर उनकी मदद न करें ताकि मुसलमान मदीना की इस तरफ़ की हिफ़ाज़त के लिए कोई इंतेज़ाम न कर सकें।' उन्होंने बड़ी चालाकी दिखाई।

यह तदबीर बहुत ही ख़तरनाक थी। मुसलमानों को ग़ाफिल रखते हुए किसी ऐसे वक़्त में बनू क़ुरैज़ा का दुश्मनों के साथ जा मिलना, जब इस्लामी फ़ौज पर काफ़िरों का ज़बरदस्त हमला हो रहा था, मदीना की उस तरफ की हिफ़ाज़त को, जहाँ बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे, पूरी तरह से नामुमकिन बना देता।'

(दीबाचा तफ़सीरुल-क़ुरआन, अनवारुल-उलूम, भाग 20, पृष्ठ 272-273)

बहरहाल, इन हालात में मुसलमानों की फ़िक्र स्वाभाविक थी और इसका हल निकालने के लिए भी कोशिश ज़रूरी थी। मदीना की हिफ़ाज़त के लिए पाँच सौ लोगों को तैनात करने का फ़ैसला आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। सीरतनिगारों ने इसका ब्यौरा इस प्रकार दिया है कि जब बनू क़ुरैज़ा के मुआहिदा तोड़ने की ख़बर मुसलमानों तक पहुँची, तो उनका ख़ौफ़ बढ़ गया और उन्हें औरतों और बच्चों की फ़िक्र होने लगी। मुसलमानों की हालत वही हो गई, जैसा अल्लाह ने फ़रमाया: 'जब वह ऊपर से और नीचे से तुम्हारे पास आए और जब तुम्हारी आँखें पथरा गईं और दिल हलक तक आ पहुँचे, और तुम लोग अल्लाह के बारे में अलग-अलग गुमान करने लगे।' (अल-अहज़ाब : 11)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमान दुश्मनों का सामना कर रहे थे और मुख़्तलिफ़ जगहों पर बारी-बारी से खंदक की पहरेदारी कर रहे थे। सेरतनिगारों ने खंदक के आठ स्थानों का वर्णन किया है जहाँ पहरा दिया जाता था, और इन सभी का इंचार्ज हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बनाया गया था।

बनू क़ुरैज़ा ने जब मुआहिदा तोड़कर घेरेबंदी करने वाले क़बीलों से मिल जाने की ख़बरें आनी शुरू हुईं, तो यह मालूम हुआ कि वह किसी भी वक़्त मदीना पर हमला करने वाले हैं। जब यह ख़बर आपको सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिली, तो आपने हज़रत सलमा बिन अस्लम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दो सौ अफ़राद के साथ और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु को तीन सौ अफ़राद के साथ मदीना की हिफ़ाज़त के लिए तैनात किया और फ़रमाया कि रात में मुख़्तलिफ़ जगहों पर पहरा दें और वक़्तन-फ़वक़्तन 'अल्लाहु अकबर' के नारे लगाते रहें।"

(सबलुल्-हुदा वल्-रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 384-385, दारुल-कुतुबुल-इल्मिय्या, बेरूत) (अस्सहीह मिन सीरतन नबी अल्अज़म सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 288, भाग 10, मुदबुआ अल्मर्कज़ुल इस्लामी लिद्दिरासात, बेरूत, 2006)

हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसे इस प्रकार वर्णन किया है: "उस समय मदीना का आसमान ज़ाहिरी कारणों से बहुत ही अंधकारमय और घनघोर था। शहर के चारों ओर हज़ारों ख़ूँख़ार दुश्मन डेरा डाले हुए थे, जो हर समय इस ताक में थे कि जैसे ही मौका मिले, मुसलमानों पर हमला कर उन्हें मिटा दें। शहर में मुसलमानों के साथ गद्दार बनू क़ुरैज़ा मौजूद थे, जिनके सैकड़ों सशस्त्र युवा अपने आप में एक वीर सेना से कम नहीं थे और जो जब भी चाहते या अवसर पाते, पीछे से मुसलमानों पर हमला कर सकते थे। और मदीने में मौजूद मुसलमान औरतें और बच्चे हर समय उनके शिकार ही माने जाते थे। इस हालात ने, जिसकी हकीकत किसी भी समझदार व्यक्ति से छिपी नहीं रह सकती, कमज़ोर मुसलमानों में भारी परेशानी और घबराहट पैदा कर दी थी।

मुनाफ़िक़ तबीयत वाले लोग खुलकर कहने लगे कि "مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا" (अहज़ाब : 13), अर्थात "ऐसा मालूम होता है कि अल्लाह और उसके रसूल के मुसलमानों की विजय के वादे केवल झूठे ही थे।" कुछ मुनाफिक़ीन ने हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आकर कहना शुरू किया, 'या रसूलुल्लाह! शहर में हमारे मकान बिल्कुल असुरक्षित हैं, कृपया हमें अनुमति दें ताकि हम अपने घरों में ठहरकर उनकी हिफ़ाज़त कर सकें।' इसके उत्तर में ख़ुदाई वह्यी नाज़िल हुई : "وَمَا هِیَ بِعَوْرَةٍ ۚ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا فِرَارًا" (अहज़ाब : 14), अर्थात "यह गलत है कि इन्हें अपने घरों के असुरक्षित होने का ख्याल है, बल्कि हकीकत यह है कि वे युद्ध के मैदान से भागने का बहाना ढूंढ रहे हैं।"

परंतु यही समय सच्चे मुसलमानों के ईमान के इज़हार का था। इसलिए क़ुरआन कहता है: "وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّاۤ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا" (अहज़ाब: 23)। जब मोमिनों ने काफिरों की इस भारी फ़ौज को देखा तो उन्होंने कहा कि 'यह तो सब वही है, जो अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था, और अल्लाह और उसका रसूल बिल्कुल सच्चे हैं।"

इस हमले से भी उनके ईमान और समर्पण में केवल इज़ाफ़ा हुआ। परंतु मौके की नज़ाकत और हालात की गंभीरता का सभी को बराबर अहसास था। इसलिए अल्लाह तआला फ़रमाता है: "اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ۔ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا" (अहज़ाब : 11-12)।

अर्थात "याद करो जब काफ़िरों की फ़ौज ऊपर से और नीचे से आकर तुम पर हमला करने लगी। जब घबराहट में तुम्हारी आँखें पथरा गईं और दिल हलक तक आ पहुँचे, और तुम (अपने-अपने अंदाज़ में) अल्लाह के बारे में अलग-अलग ख्यालात करने लगे। वह समय सच में मोमिनों के लिए एक कड़ा इम्तिहान था और मुसलमानों पर एक बहुत भारी झटका आया।"

ऐसे ख़तरनाक वक्त में मुसलमानों की थोड़ी सी जमाअत, जिसमें कुछ कमज़ोर तबीयत वाले लोग और कुछ मुनाफ़िक़ भी शामिल थे, कैसे मुक़ाबला कर सकती थी? उनके पास इतने लोग भी नहीं थे कि कमज़ोर जगहों पर ठीक से पहरा दे सकें। रात-दिन की कठिन ड्यूटी ने मुसलमानों को पूरी तरह थका दिया था। दूसरी तरफ़ बनू क़ुरैज़ा की गद्दारी की वजह से शहर के गलियों और मुहल्लों में पहरा मज़बूत करना भी ज़रूरी हो गया था ताकि औरतें और बच्चे सुरक्षित रह सकें।

काफ़िरों के सिपाही मुसलमानों को हर तरह से परेशान करने की कोशिश करते थे। कभी वे किसी कमज़ोर जगह पर हमला करते और मुसलमानों को उस जगह की हिफ़ाज़त के लिए इकट्ठा होना पड़ता, और उसी समय काफ़िर कहीं और हमला कर देते। कभी-कभी वे एक ही वक्त में दो-तीन जगहों पर हमला कर देते, जिससे मुसलमानों की जमाअत बिखर जाती और हालात नाज़ुक हो जाते। काफ़िरों का लश्कर कभी शहर की सीमा में घुसने की कोशिश करता। मुसलमान आमतौर पर तीरों के माध्यम से इन हमलों का उत्तर देते थे, परंतु कभी-कभी काफ़िरों के सिपाही दो हिस्सों में बँटकर हमला करते। एक हिस्सा तीरों की बौछार करके मुसलमानों को पीछे हटने पर मजबूर करता, जबकि दूसरा हिस्सा खंदक के किसी कमज़ोर हिस्से पर धावा बोलता और उसे कूदकर पार करने की कोशिश करता। यह जंग सुबह से लेकर शाम तक, बल्कि कभी-कभी रात के समय भी जारी रहती थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लेखनी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 585-586)

इतिहास में यह भी उल्लेख मिलता है कि एक मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़त्फ़ान के साथ सुलह के बारे में सहाबा, विशेष रूप से अंसार से राय ली थी। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी तफ़्सील वर्णन करते हुए लिखा है :

"यह दिन मुसलमानों के लिए अत्यंत तकलीफ़देह, परेशान करने वाले और ख़तरनाक दिन थे। जैसे-जैसे यह घेराबंदी लंबी होती जा रही थी, मुसलमानों की ताक़त कम होती जा रही थी। हालाँकि उनके दिल ईमान और इख़्लास से भरे थे, लेकिन शरीर, जो माद्दी क़ानून के अधीन होता है, धीरे-धीरे कमज़ोर हो रहा था। जब हज़रत पैग़ंबर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन हालात को देखा, तो आपने अंसार के नेताओं, सअद बिन मुआज़ और सअद बिन उबादा को बुलाया और उन्हें पूरी स्थिति से अवगत कराया और उनसे राय मांगी कि हमें क्या करना चाहिए। आपने अपनी तरफ़ से यह भी वर्णन किया कि अगर तुम लोग चाहो तो यह भी संभव है कि क़बीला ग़त्फ़ान को मदीना के माल-ओ-मुसलसल में से कुछ हिस्सा देकर इस जंग को टाल दिया जाए।

सअद बिन मुआज़ और सअद बिन उबादा ने एक साथ उत्तर दिया, 'या रसूलुल्लाह! अगर इस बारे में आपको कोई ख़ुदाई वह्यी (प्रकाशना) हुई है तो हम सर-ए-तस्लीम ख़म करते हैं। आप इस प्रस्ताव पर काम कर सकते हैं।' आपने फ़रमाया, 'नहीं, मुझे इस मामले में कोई वह्यी नहीं हुई है। मैं तो सिर्फ़ तुम लोगों की तकलीफ़ की वजह से राय ले रहा हूँ।'

सअद बिन मुआज़ और सअद बिन उबादा ने उत्तर दिया, 'फिर हमारी राय यह है कि जब हमने शिर्क की हालत में कभी किसी दुश्मन को कुछ नहीं दिया, तो अब मुसलमान हो कर क्यों दें? वल्लाह! हम उन्हें तलवार की धार के सिवा कुछ नहीं देंगे।' अब तो सिर्फ़ जंग है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अंसार की चिंता थी, क्योंकि वे मदीना के असली निवासी थे, और शायद इस मशवरे का मक़सद यही था कि अंसार की मानसिक स्थिति का पता चले कि क्या वे इन मुसीबतों से परेशान हैं या नहीं। और अगर वे परेशान हों, तो उन्हें तसल्ली दी जाए। इसलिए आपने सअद बिन मुआज़ और सअद बिन उबादा की राय को ख़ुशी से क़बूल किया और जंग जारी रही।"

(सीरत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लेखनी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 589-590)

जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है, खंदक एक मज़बूत सुरक्षा दीवार के तौर पर काम कर रही थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि मुसलमान पूरी तरह महफ़ूज़ थे। सबसे पहले, मुनाफ़िक़ और ख़ास तौर पर बनू क़ुरैज़ा जैसे लड़ाके मदीना के अंदर ही मौजूद थे। जब उन्होंने मुआहिदा तोड़ दिया, तो वे एक ख़तरनाक दुश्मन बन गए। दूसरी तरफ़, खंदक के बावजूद कुछ जगहों पर दुश्मन के हमले का ख़तरा था, जहाँ से दुश्मन खंदक पार कर अंदर आ सकता था।

इस परेशान करने वाली स्थिति के चलते जगह-जगह पहरे दिए जा रहे थे, और इस पहरे में ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शरीक होते। आप ख़ुद निगरानी करते और सहाबा की हिम्मत बढ़ाते। यह सारा अमल दिन और रात चलता रहता। मदीना की ये रातें कड़ी सर्दी की थीं और भूख की मुश्किलें इसके अलावा थीं।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खंदक की दरारों पर पहरा देने जाते थे। जब आपको सर्दी की तकलीफ़ होती, तो मेरे पास तशरीफ़ लाते, और जब आपका शरीर गरम हो जाता, तो फिर खंदक की दरार की तरफ़ तशरीफ़ ले जाते और फ़रमाते कि मुझे डर है कि लोग इस तरफ़ से आ सकते हैं। एक दिन आप इसी तरह आराम फ़रमा रहे थे, लेकिन इतने थके हुए थे कि फ़रमाया, 'काश! आज रात कोई नेक आदमी यहाँ पहरा दे देता।' तभी आपने हथियारों की आवाज़ सुनी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा, 'कौन है?'

सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, 'या रसूलुल्लाह! मैं सअद हूँ। आपकी हिफ़ाज़त के लिए पहरा देने आया हूँ।' तो आपने अपनी हिफ़ाज़त के बजाय फ़रमाया, 'तुम वहाँ जाओ, जहाँ खंदक का एक हिस्सा कमज़ोर है, और वहाँ पहरा दो।'

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वफ़ादार सहाबा का आपके प्रति प्रेम और वफ़ादारी का यह अजीब रंग था कि वे कैसे खुद को पेश कर रहे थे, और दूसरी तरफ़ आप थे कि अपनी जान की बजाय दूसरों को तरजीह दे रहे थे। ऐसे शुजाअत (वीर), जिनको अपनी जान की कोई फ़िक्र नहीं थी, लेकिन अहल-ए-मदीना की फ़िक्र थी। अक्सर खुद आप जगह-जगह मौजूद होते और जब कभी स्वयं आराम करने के लिए तंबू में तशरीफ़ लाते, तो उसका अधिकतर हिस्सा सजदे में बिताते हुए और दुआएँ करते हुए नज़र आते।"

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ख़ंदक के मौके पर मौजूद थी और हम कड़ी सर्दी में थे। मैंने एक रात देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और अपने ख़ेमे में जितनी अल्लाह ने चाहा, उतनी लंबी नमाज़ पढ़ी। फिर मैंने देखा कि आप थोड़ी देर के लिए ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ ले गए। फिर मैंने आपको यह कहते सुना कि ये मुशरिकों के घुड़सवार ख़ंदक पार करने की कोशिश कर रहे हैं। फिर आपने अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु को पुकारा, तो उन्होंने कहा, "लब्बैक! मैं हाज़िर हूँ।" आपने पूछा, "क्या तुम्हारे साथ और भी कोई है?" उन्होंने कहा, "जी हाँ, मेरे साथ कुछ साथी हैं जो आपके ख़ेमे के आस-पास पहरा दे रहे हैं।" आपने फ़रमाया, "अपने साथियों को लेकर ख़ंदक का चक्कर लगाओ। ये मुशरिकों के घुड़सवार ख़ंदक का चक्कर लगा रहे हैं। उनकी यह ख्वाहिश है कि वे तुम पर ग़फ़लत (लापरवाही) में हमला करें।"

फिर आपने यह दुआ फ़रमाई :

اَللّٰهُمَّ فَادْفَعْ عَنَّا شَرَّهُمْ، وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ، وَاغْلِبْهُمْ، فَلَا يَغْلِبُهُمْ اَحَدٌ غَيْرُكَ۔

"अल्लाहुम्मा फ़ादफ़ा अन्ना शर्राहुम, वंसुर्ना अलैहिम, वअग़ालिबहुम, फ़ला युग़ालिबहुम अहदुन ग़ैरुक।" (हे अल्लाह! हमें उनके शर (बुराई) से बचा और उनके खिलाफ हमारी मदद कर और उन्हें पराजित कर, तुझसे बेहतर कोई उन्हें पराजित नहीं कर सकता।)

अब्बाद अपने साथियों के साथ गए, तो अबू सुफ़ियान बिन हरब अपने साथियों के साथ ख़ंदक की तंग जगह का चक्कर लगा रहा था। मुसलमानों को उनका पता चल गया, तो उन्होंने उन पर पत्थर और तीर चलाए, जिससे वे अपनी जगहों पर वापस लौट गए। हज़रत अब्बाद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं वापस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुआ। मैंने देखा कि आप नमाज़ पढ़ रहे थे, तो मैंने आपको सारी खबर दी।

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह अब्बाद बिन बश्र पर रहमत करे। वे समस्त सहाबा में सबसे ज़्यादा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ेमे के पास रहते थे और हमेशा आपका पहरा देते थे। (सबुलुल्-हुदा वल-रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 374-375, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जुर्रत और मुसलमानों की ख़ैरख़्वाही का यह हाल था कि आप सर्दी में रात को उठ-उठकर उस जगह जाते और पहरा देते। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि आप पहरा देते हुए थक जाते और सर्दी से निढाल हो जाते, तो वापस आकर थोड़ी देर मेरे साथ लिहाफ़ में लेट जाते, लेकिन जैसे ही शरीर गरम होता, फिर उस दरार की हिफ़ाज़त के लिए चले जाते। इस तरह लगातार जागने से आप एक दिन पूरी तरह थक गए और रात के वक़्त फ़रमाया, "काश! इस वक़्त कोई मुखलिस मुसलमान होता, तो मैं आराम से सो जाता।" इतने में बाहर से सअद बिन वक़्क़ास की आवाज़ आई। आपने पूछा, "तुम क्यों आए हो?" उन्होंने कहा, "आपका पहरा देने के लिए।" आपने फ़रमाया, "मुझे पहरे की ज़रूरत नहीं है, तुम वहाँ जाओ जहाँ ख़ंदक का किनारा टूट गया है, और वहाँ पहरा दो ताकि मुसलमान महफ़ूज़ रहें।"

इसी तरह के दिनों में आपने एक दिन कुछ लोगों के हथियारों की आवाज़ सुनी और पूछा, "कौन है?" तो अब्बाद बिन बश्र ने कहा, "मैं हूँ।"

(माख़ूज़ अज़ दीबाचा तफ़्सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 279)

(सीरतुल हल् बिया, भाग 3, पृष्ठ 25, दारुल मआरिफा, बेरूत)

इस युद्ध के दौरान हज़रत सफ़ियाह (रज़ियल्लाहु अन्हा) की बहादुरी की घटना भी मिलती है। इसकी जानकारी में लिखा गया है कि हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की पत्नियाँ और उनकी फूफी हज़रत सफ़ियाह बिन्त अब्दुल मुत्तलिब (रज़ियल्लाहु अन्हा) अन्य महिलाओं के साथ एक किले में थीं, जिसे फ़ारिक कहा जाता था। अर्थात हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की पत्नियाँ, उनकी फूफी, हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के करीबी रिश्तेदार और अन्य महिलाएँ भी उस किले में थीं और हज़रत हसन बिन साबित (रज़ियल्लाहु अन्हो) वहाँ के नज़र रखने वाले थे। जब बनू क़ुरैज़ा ने अपनी वफ़ादारी तोड़ने का ऐलान किया, तो वहाँ के यहूदी भी किसी न किसी तरीके से मुसलमानों को नुकसान पहुँचाने की कोशिशों में जुट गए। हज़रत सफ़ियाह (रज़ियल्लाहु अन्हा), जो हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की फूफी हैं, बयान करती हैं कि एक बार दस यहूदी आए। वे हमारे किले के चारों ओर चक्कर लगाने लगे, जैसे किसी मौके की तलाश में हों कि कब और कहाँ से अंदर जाया जा सकता है। इतने में एक यहूदी किले की दीवार के बिल्कुल करीब आया। मैं उसे देख रही थी। मैंने हसन से कहा कि ऐ हसन! वहाँ जाओ और इस यहूदी का मुकाबला करो। तो उसने कहा, ऐ अब्दुल मुत्तलिब की बेटी! अल्लाह की कसम! आप जानती हैं कि मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ। अगर मुझ में यह हिम्मत होती, तो मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के साथ जाता। हज़रत सफ़ियाह (रज़ियल्लाहु अन्हा) फरमाती हैं कि जब हसन ने यह कहा, तो मैंने वहाँ से एक लकड़ी उठाई, किले से उतरी और उस आदमी के सिर पर जो चक्कर लगा रहा था, इतनी जोर से लकड़ी मारी कि उसका सिर फट गया, जिससे वह वहीं ढेर हो गया। मैं वापस आई और हसन से कहा कि नीचे उतरकर उसका सामान ले आओ, अर्थात जो कुछ उसके पास है, वह बतौर ग़निमत ले आओ। हसन ने कहा, ऐ अब्दुल मुत्तलिब की बेटी! मुझे उसके सामान की कोई जरूरत नहीं। तो मैंने कहा, इसका सिर काटकर यहूदियों पर फेंक दो, ताकि वे डर जाएँ और फिर इधर का रुख न करें। हज़रत हसन (रज़ियल्लाहु अन्हो) ने कहा कि मुझ में इतनी हिम्मत नहीं है, तो सफ़ियाह ने उसका सिर काटकर यहूदियों की तरफ फेंक दिया। (फिर खुद गईं, उस आदमी का सिर काटा और दीवार के पार फेंक दिया।) इस पर यहूदी डर गए और कहने लगे कि हम जानते थे कि मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) महिलाओं को अकेला नहीं छोड़ सकते, यकीनन उनके साथ यहाँ सुरक्षा मौजूद है और वे लोग वहाँ से भाग गए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को इसकी खबर दी गई, तो आपने ग़निमत में से हज़रत सफ़ियाह (रज़ियल्लाहु अन्हा) के लिए हिस्सा निर्धारित किया, जैसे मर्दों के लिए हिस्सा निर्धारित किया जाता है।

(सबलुल् हुदा वल-रिशाद, खंड 4, पृष्ठ 371-372, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बेरुत)

सीरत ख़ातमन नबिय्यीन (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) में इसका उल्लेख करते हुए हज़रत मिर्जा बशीर अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हो) लिखते हैं कि "शहर में महिलाओं और बच्चों का यह हाल था कि हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उन्हें आमतौर पर शहर के एक खास हिस्से में, जो एक प्रकार के किले का रंग रखता था, इकट्ठा कर दिया। लेकिन उनकी सुरक्षा के लिए पर्याप्त मुसलमान को तैनात नहीं किया जा सका, खासकर ऐसे समय में जब युद्ध के मैदान में दुश्मन के हमलों का ज्यादा जोर होता था, मुसलमान महिलाएँ और बच्चे लगभग पूरी तरह असुरक्षित स्थिति में रह जाते थे, और उनकी सुरक्षा के लिए केवल वे पुरुष रह जाते थे जो किसी कारण से युद्ध के लिए सक्षम नहीं थे। चूंकि किसी ऐसे ही मौके का फायदा उठाकर यहूदियों ने शहर के इस हिस्से पर हमला करने की योजना बनाई, जहाँ महिलाएँ और बच्चे इकट्ठा थे, और जासूसी के लिए उन्होंने अपने एक आदमी को इस मोहल्ले में भेजा। उस समय संयोगवश महिलाओं के करीब केवल एक साथी हसन बिन साबित शायर मौजूद थे, जो दिल की असामान्य कमज़ोरी के कारण युद्ध के मैदान में जाने के योग्य नहीं थे। जब महिलाओं ने इस दुश्मन यहूदी को ऐसे संदिग्ध हालात में अपने ठिकाने के आसपास घूमते देखा, तो हज़रत सफ़ियाह बिन्त अब्दुल मुत्तलिब, जो हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की फूफी थीं, ने हसन से कहा कि यह व्यक्ति एक दुश्मन यहूदी है और यहाँ जासूसी और शरारत के लिए घूम रहा है। इसे मार दो ताकि वापस जाकर यह किसी फसाद का कारण न बने। लेकिन हसन को इस की हिम्मत न हुई, जिसके कारण हज़रत सफ़ियाह ने खुद आगे बढ़कर इस यहूदी का मुकाबला किया और उसे मारकर गिरा दिया। फिर उन्हीं की सलाह से यह तय किया गया कि इस यहूदी जासूस का सिर काटकर किले की उस दिशा में गिरा दिया जाए, जहाँ यहूदी इकट्ठा थे, ताकि यहूदी मुसलमान महिलाओं पर हमला करने की हिम्मत न कर सकें और वे यह समझें कि उनकी सुरक्षा के लिए इस जगह पर्याप्त पुरुष मौजूद हैं। इस प्रकार यह योजना सफल हुई और इस मौके पर यहूदी लोग डरकर वापस चले गए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत मिर्जा बशीर अहमद (रज़ियल्लाहु अन्हो), एम.ए. पृष्ठ 590-591)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस घटना का उल्लेख किया है। वह फ़रमाते हैं, "बनू क़ुरैज़ा इस ताक में थे कि कोई मौक़ा मिले तो बिना मुसलमानों को शक में डाले वे मदीना में घुसकर औरतों और बच्चों को क़त्ल कर दें। एक दिन, बनू क़ुरैज़ा ने एक जासूस भेजा ताकि वह देख सके कि औरतें और बच्चे अकेले हैं या उनकी हिफ़ाज़त के लिए सैनिक तैनात हैं। वह जासूस उस ख़ास इलाक़े के पास पहुँचा, जहाँ वे ख़ास परिवार जो दुश्मनों से ज़्यादा ख़तरे में थे, इकट्ठा किए गए थे। उसने चारों तरफ़ देखना शुरू किया कि कहीं मुसलमान सैनिक छुपे हुए तो नहीं हैं। वह अभी इसी घात में था कि पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की फ़ूफ़ी हज़रत सफ़िया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने उसे देख लिया। इत्तेफ़ाक़ से उस समय वहाँ सिर्फ़ एक ही मुसलमान मर्द मौजूद था, और वह भी बीमार था। हज़रत सफ़िया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने उससे कहा, 'यह आदमी काफ़ी देर से औरतों के इलाके में घूम रहा है और जाने का नाम नहीं ले रहा, यह यक़ीनन एक जासूस है। तुम इसका मुक़ाबला करो, वरना दुश्मन यहाँ के हालात जानकर हमला कर सकता है।' उस बीमार सहाबी ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। तब हज़रत सफ़िया (रज़ियल्लाहु अन्हा) ने खुद एक बड़ा बांस लेकर उस जासूस का सामना किया और दूसरी औरतों की मदद से उसे मारने में कामयाब हो गईं। बाद में जांच करने पर पता चला कि वह यहूदी था और बनू क़ुरैज़ा का जासूस था। तब मुसलमान और ज़्यादा घबरा गए और समझे कि अब मदीना का यह इलाक़ा भी महफ़ूज़ नहीं है। परंतु सामने की तरफ़ से दुश्मन का इतना ज़ोर था कि अब वह इस तरफ़ की हिफ़ाज़त के लिए कोई इंतज़ाम नहीं कर सकते थे, फिर भी पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने औरतों की हिफ़ाज़त को प्राथमिकता दी और बारह सौ सैनिकों में से पाँच सौ को औरतों की हिफ़ाज़त के लिए शहर में तैनात कर दिया, जबकि खंदक की हिफ़ाज़त और दुश्मन की अठारह-बीस हज़ार की फौज का मुक़ाबला करने के लिए सिर्फ़ सात सौ सैनिक बचे।"

हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) का अम्र बिन अब्द वुद आमिरी को क़त्ल करने का वाक़या भी मिलता है। इसकी तफ़सील कुछ यूँ है कि जब काफ़िरों की फौज ने मदीना का घेराव किया हुआ था, तो उनके सरदारों ने आपसी राय से हमला करने का फ़ैसला किया। वे खंदक में ऐसी तंग जगह की तलाश करने लगे, जहाँ से वे अपने सवारों को पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उनके सहाबा तक पहुँचा सकें। आख़िरकार, वे लोग एक ऐसे तंग हिस्से पर पहुँच गए, जहाँ मुसलमान बेख़बर थे। अक्रमा बिन अबू जहल, नोफ़ल बिन अब्दुल्लाह, ज़िरार बिन ख़त्ताब, हुबैराह बिन अबू वहब और अम्र बिन अब्द वुद ने उस जगह से खंदक को पार कर लिया। अम्र बिन अब्द वुद इतना बहादुर था कि उसे अरब में एक हज़ार मर्दों के बराबर समझा जाता था। वह जंग-ए-बद्र में ज़ख़्मी हुआ था और उन्हीं ज़ख्मों की वजह से वह जंग-ए-उहद में शामिल नहीं हो सका था। उसने क़सम खाई थी कि जब तक पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को (नौज़ुबिल्लाह) क़त्ल न कर ले, अपने सिर पर तेल नहीं लगाएगा। उसने बड़े घमंड से ललकारा। खंदक पार करके उसने ऊँची आवाज़ में नारा लगाया और मुसलमानों को ललकारा, 'ऐ जन्नत की ख़्वाहिश रखने वालो, आओ! मैं तुम्हें जन्नत में पहुँचा दूँ, या तुम मुझे जहन्नम में भेज दो।' जब उसके मुक़ाबले पर कोई न खड़ा हुआ, तो हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) उठना चाहा, लेकिन पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उन्हें रोकते हुए कहा, 'अली, तुम्हारा मुकाबला अम्र बिन अब्द वुद से है।' लेकिन जब उसने दूसरी या तीसरी बार आवाज़ दी, तो हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) उठ खड़े हुए। इस बार पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने उन्हें नहीं रोका। फिर पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने अपना अमामा उनके सिर पर बाँधा, अपनी तलवार दी और दुआ के साथ उन्हें मुक़ाबले पर भेजा। हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) आगे बढ़े और अम्र से कहा, 'मैंने सुना है कि तुमने ये कसम खाई है कि अगर क़ुरैश में से कोई शख़्स तुमसे दो बातें कहेगा, तो तुम उनमें से एक ज़रूर मानोगे।' अम्र ने कहा, 'हाँ।' हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा, 'तो पहली बात मैं तुमसे ये कहता हूँ कि मुसलमान हो जाओ और पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मानकर ख़ुदाई इनामात के वारिस बनो।' अम्र ने कहा, 'ये मुमकिन नहीं है।' हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा, 'अगर ये बात मंज़ूर नहीं है, तो फिर आओ, मेरे साथ लड़ने के लिए तैयार हो जाओ।' इस पर अम्र हंसने लगा और कहने लगा, 'मुझे नहीं लगता था कि कोई शख़्स मुझसे ऐसा कह सकता है।' फिर उसने हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) का नाम और नसब पूछा। जब हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अपना नाम बताया, तो उसने कहा, 'तुम्हारा बाप मेरा दोस्त था। इसलिए तुम चले जाओ और किसी बड़े को भेजो।' हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा, 'तुम मेरा खून बहाना नहीं चाहते, परंतु मुझे तुम्हारा खून बहाने में कोई हिचकिचाहट नहीं है।' इस पर अम्र जोश में आकर अपने घोड़े से कूदा, उसकी टांगें काट दीं और घोड़े को मार दिया। फिर वह मुकाबले के लिए नीचे उतरा और दीवानों की तरह हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की तरफ़ बढ़ा। उसने इतनी ज़ोर से तलवार चलाई कि वह हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ढाल को चीरती हुई उनकी पेशानी पर लगी और उन्हें ज़ख़्मी कर दिया। लेकिन उसी वक़्त हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने 'अल्लाहु अकबर' का नारा लगाते हुए ऐसा वार किया कि अम्र का बचाव न हो सका और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की तलवार उसके कंधे को काटती हुई नीचे उतर गई, और वह तड़पकर गिर पड़ा और उसकी जान निकल गई।"

कुछ रिवायतों में यह भी आता है कि दो बातों के बजाय, उनसे कहा गया था कि तीन बातों में से एक मान लो। पहली बात यह थी कि तुम वापस लौट जाओ। जब हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने यह बात कही, तो उसमें यह भी था कि वापस लौट जाओ, जिस पर अम्र ने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। फिर दूसरी बात यह थी कि मुसलमान हो जाओ, और तीसरी थी कि फिर मुकाबले के लिए तैयार हो जाओ। अम्र के क़त्ल होने के बाद उसके बाकी साथी दहशत में आकर अपने घोड़ों पर भाग गए। हज़रत ज़ुबैर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उनका पीछा किया और नुफ़ल बिन अब्दुल्लाह को मार गिराया।

इसी तरह उनमें से एक और, हुबैराह बिन अबू वहब, जो हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की बहन उम्म हानी का पति था, पर तलवार से ऐसा वार किया कि घोड़े की हंसली की हड्डी कट गई। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक, अम्र के मारे जाने के बाद हुबैराह और ज़िरार बिन ख़त्ताब ने हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर हमला कर दिया, लेकिन उत्तरी हमले में दोनों भाग गए। हुबैराह तो अपनी ज़िरह छोड़कर भागा, जबकि उसे क़ुरैश का सबसे बेहतरीन घुड़सवार माना जाता था।

एक रिवायत के मुताबिक, ज़िरार बिन ख़त्ताब जो कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का भाई बताया गया है (हालांकि यह एक गलती है, वह उनके भाई नहीं थे), जब भागा, तो हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उसका पीछा किया। ज़िरार अचानक रुका और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर भाला चलाने वाला था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कहा, "उमर! मेरा यह एहसान याद रखना कि मैंने तुम पर हमला नहीं किया।" हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने भी शायद इस एहसान को याद रखा होगा। ज़िरार का एहसान जो भी हो, यह अल्लाह का एहसान था कि बाद में मक्का की फ़तह के मौके पर ज़िरार इस्लाम ले आया और फिर इस्लामी युद्धों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उसने बहादुरी के कई कारनामे दिखाए और जंग-ए-यमामा में शहीद हो गया। कुछ के मुताबिक वह शहीद नहीं हुए, बल्कि इस्लाम पर लंबी उम्र बिताई और उसी पर उनकी मौत हुई।

अम्र बिन अब्द वुद के क़त्ल के बाद, काफ़िरों ने पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की खिदमत में पैग़ाम भेजा कि वे उसकी लाश को दस हज़ार दिरहम के बदले में खरीद लेंगे। लेकिन पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "उसे ले जाओ, हम मुर्दों की क़ीमत नहीं खाते।"

कुछ रिवायतों के मुताबिक, नुफ़ल बिन अब्दुल्लाह को एक अलग मौके पर मारा गया। इसका विवरण यह है कि एक दिन वह अपने घोड़े पर सवार होकर खंदक को पार करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन घोड़ा खंदक पार नहीं कर सका और सवार समेत उसमें गिर गया। इस वजह से अल्लाह ने उसे हलाक कर दिया, क्योंकि खंदक में गिरने से उसकी गर्दन की हड्डी टूट गई।

(माखूज़: सिरत-ए-ख़ातिमन-नबीयीन हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए. पृष्ठ 588-589)

(अल-बिदायाह व अन-निहायाह, खंड 2, हिस्सा 4, पृष्ठ 115, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत)

(सबलुल् हुदा, खंड 4, पृष्ठ 377-378, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत)

(सिरत-ए-हलबिया, खंड 3, पृष्ठ 20, दारुल मआरिफ़, बेरूत)

(तबकातुल् कुबरा, हिस्सा 2, पृष्ठ 283, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत)

(ग़ज़वा अहज़ाब, बशमील, पृष्ठ 225, नफ़ीस अकादमी, कराची)

(अल-इसाबा फी तमीज़ अस-सहाबा, खंड 3, पृष्ठ 392, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत, लेबनान, 1995)

(अस-सीरह अन-नबवी, अबू अल-हसन अन्नदवी, हिस्सा 1, पृष्ठ 353, मक्तबा अश-शामिला)

मशरिकीन ने उसकी लाश लेने के लिए अपना वफ़्द भेजा और पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को दीयत की पेशकश की। लेकिन पैगंबर मुहम्मद

(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "हमें इसकी दीयत की कोई ज़रूरत नहीं है, और हम तुम्हें उसे दफ़नाने से नहीं रोकते।"

(सबलुल् हुदा व अर-रशाद, खंड 4, पृष्ठ 380, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने नुफ़ल के क़त्ल के वाक़े को इस तरह बयान किया है। आप (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं:

"दुश्मन जो खंदक पर हमला कर रहे थे, कभी-कभी उसमें कूदने में कामयाब हो जाते थे। एक दिन क़ुरैश के कुछ बड़े-बड़े जनरल खंदक पार करके दूसरी तरफ आ गए, लेकिन मुसलमानों ने ऐसा ज़बरदस्त हमला किया कि उनके पास वापस जाने के अलावा कोई चारा न रहा। उसी दौरान, खंदक पार करते समय, काफ़िरों का एक बहुत बड़ा सरदार, जिसका नाम नुफ़ल था, मारा गया। यह इतना बड़ा सरदार था कि काफ़िरों को यह डर हुआ कि अगर इसकी लाश की बेअदबी हुई तो अरब में उनके लिए कहीं मुंह दिखाने की जगह नहीं बचेगी। इसलिए उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास एक संदेश भेजा कि अगर आप इसकी लाश लौटा दें, तो वे आपको दस हज़ार दिरहम देने को तैयार हैं। उनका खयाल था कि जिस तरह हमने मुसलमानों के सरदारों और खुद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के चाचा के कान और नाक उहद की लड़ाई में काट दिए थे, उसी तरह आज मुसलमान हमारे इस सरदार की नाक और कान काटकर हमारी कौम की बेइज़्ज़ती करेंगे। लेकिन इस्लाम के तो बिलकुल अलग उसूल हैं। इस्लाम लाशों की बेअदबी की इजाज़त नहीं देता। जब काफ़िरों का संदेश रसूले करीम (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के पास पहुंचा, तो आपने फरमाया, 'इस लाश का हम क्या करेंगे? यह लाश हमारे किस काम की है कि इसके बदले हम तुमसे कोई कीमत लें? अपनी लाश—जो इस आदमी की है—खुशी से उठा कर ले जाओ। हमें इसका कोई लेना-देना नहीं है।"

(दीबाचा तफ़सीरुल-क़ुरआन, अनवार-उल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 277-278)आगे इसकी और भी तफ़सीलें मिलेंगी, इन् शा अल्लाह।

इस हफ्ते आज से लज्ना (महिला संगठन) और अंसार (वृद्ध संगठन) के इज्तिमा (समारोह) भी शुरू हो रहे हैं। जिस तरह मैंने ख़ुद्दाम को कहा था, उसी तरह लज्ना और अंसार से भी यही कहता हूँ कि इन दिनों में विशेष रूप से दुआओं में ज़्यादा वक्त गुजारें और दरूद शरीफ़ पढ़ने पर ध्यान दें।

अल्लाह तआला आप सबको इसकी तौफ़ीक़ दे और इज्तिमा के मकसद को पूरा करने की कोशिश करें, न कि सिर्फ़ मनोरंजक कार्यक्रमों या बातचीत में समय बर्बाद करें।

अल्लाह तआला हर लिहाज़ से इसे बर्कत वाला बनाए।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 18 अक्टूबर 2024, पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

पृष्ठ12का शेष भाग

इस यात्रा के लिए जारी किए गए बोर्डिंग पास पर भी Khilafat Flight 2022 लिखा हुआ था। फ्लाइट का नंबर KF2022- था। बोर्डिंग पास पर यह शब्द दर्ज थे: " Ahmadiyya Muslim Community USA 2020-1920 .100 Centennial Khilafat Flight 2022 in the Company of Hazrat Mirza Masroor Ahmad Khalifatul Masih V(aba)।"

हज़ूर-ए-अनवर का एयरपोर्ट पर आगमन 11:40 बजे हुआ। विमान को एयरपोर्ट के एक प्राइवेट क्षेत्र में पार्क किया गया था, जहां से हज़ूर-ए-अनवर और हज़रत बेगम साहिबा विशेष व्यवस्था के तहत विमान में सवार हुए।

विमान डलास के फोर्ट वर्थ इंटरनेशनल एयरपोर्ट से 12:10 बजे बाल्टीमोर (Baltimore) के इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना हुआ। लगभग दो घंटे और 35 मिनट की उड़ान के बाद, विमान बाल्टीमोर (मैरीलैंड) में स्थानीय समय के अनुसार 3:45 बजे उतरा। मैरीलैंड का समय डलास (टेक्सास) से एक घंटा आगे है।

4 बजे हज़ूर-ए-अनवर एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए, जहां श्रीमान फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब (नायब अमीर अमेरिका), श्रीमान मुख़्तार अहमद मलही साहिब (नेशनल जनरल सेक्रेटरी), श्रीमान सय्यद शमशाद अहमद नासिर (मौलवी सिलसिला अमेरिका), और श्रीमान डॉक्टर अदील अब्दुल्लाह साहिब (सदर मजलिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया अमेरिका) ने हज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया। इसके बाद, एयरपोर्ट से जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका के केंद्र मस्जिद बैतुर्रहमान के लिए प्रस्थान हुआ।

अपने प्यारे आका के स्वागत और हज़ूर-ए-अनवर का दीदार करने के लिए अमेरिका के इस क्षेत्र के दूर-दराज़ शहरों और बस्तियों से हज़ारों लोग सुबह से ही बैतुर्रहमान पहुंचने लगे थे। वहां मर्द, औरतें, बच्चे और बुजुर्गों का एक विशाल हुजूम जमा था, जो अपने प्यारे और महबूब आका के दीदार के लिए बेचैन था।

मैरीलैंड, बाल्टीमोर, और वाशिंगटन के अलावा, दक्षिण वर्जीनिया, उत्तर वर्जीनिया, न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया, लॉस एंजिलिस, शिकागो, ह्यूस्टन, डेट्रॉइट, और अन्य स्थानों से जमाअतों के सदस्य पहुंचे थे। इसके अलावा, मेक्सिको और प्यूर्टो रिको से भी लोग अपने प्यारे आका के स्वागत के लिए आए थे। कई जमाअतों और क्षेत्रों से लोग लंबी यात्राएं करके यहां पहुंचे थे, जैसे मियामी से 1078 मील, तुलसा से 1220 मील, ह्यूस्टन से 1422 मील और लॉस एंजिलिस से 2653 मील की दूरी तय करके लोग पहुंचे थे।

इसके अलावा, कनाडा, ब्रिटेन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, और अन्य देशों से भी लोग हज़ूर-ए-अनवर की आमद के इंतजार में थे। इनमें से कई लोग ऐसे थे, जिन्होंने पहली बार हज़ूर-ए-अनवर को नजदीक से देखने का मौका पाया। एम.टी.ए (MTA) के कैमरे इस पूरे स्वागत के दृश्य को रिकॉर्ड कर रहे थे।

अंततः वह बर्बरकत और यादगार लम्हा आ गया जब ठीक 4:30 बजे हज़ूर-ए-अनवर की गाड़ी मुख्य गेट से अंदर दाखिल हुई। हज़ूर-ए-अनवर गाड़ी से नीचे उतर आए और अपने हाथ ऊंचा करके सबको "अस्सलामु अलैकुम" कहा। दूसरी तरफ, हर मर्द, औरत, बच्चे, और बुजुर्ग ने उत्साह से अपने हाथ उठाए। लोग लगातार बड़े जोशीले अंदाज़ में नारे लगा रहे थे। चारों तरफ से "अस्सलामु अलैकुम हज़ूर" की आवाजें गूंज रही थीं। बच्चे-बच्चियां समूहों में स्वागत गीत गा रहे थे। हज़ूर-ए-अनवर, भीड़ के बीच से गुजरते हुए, अपने हाथ ऊंचा करके उनके नारों और सलाम का उत्तर दे रहे थे। वहां खुशी और मोहब्बत का माहौल था, और इश्क़ और फिदाइयत की नई कहानियां लिखी जा रही थीं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ के ठहरने का इंतज़ाम मस्जिद बैत-उर-रहमान के परिसर में स्थित गेस्ट हाउस में किया गया था। हज़ूर-ए-अनवर जमाअत के लोगों के बीच से गुजरते हुए अपनी रिहाइशगाह पर पहुंचे।

शाम 5:20 बजे , हज़ूर-ए-अनवर ने मस्जिद बैतुर्रहमान में तशरीफ लाकर ज़ोहर और अस्र की नमाज़ों को मिलाकर अदा किया। हज़ूर-ए-अनवर की इमामत में 2500 से ज्यादा मर्दों और औरतों ने नमाज़ पढ़ने की सआदत पाई।

जब हज़ूर-ए-अनवर नमाज़ अदा करने आ रहे थे, तो कुछ औरतें और बच्चे तेजी से उस रास्ते की ओर बढ़े, जहां से हज़ूर-ए-अनवर का गुजरना था। इस दौरान एक बच्चा मुँह के बल गिर गया। हज़ूर-ए-अनवर ने हिदायत दी कि पता किया जाए कि उस बच्चे को चोट तो नहीं लगी। जब हज़ूर-ए-अनवर नमाज़ अदा करके वापस जा रहे थे, तो उस बच्चे की माँ उसे लेकर रास्ते में खड़ी थी। हज़ूर-ए-अनवर ने बड़ी शफकत से उस बच्चे का हाल पूछा, उसके चेहरे पर हाथ रखा, और उसे दुआ दी। बाद में, हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका के इस केंद्रीय सेंटर का कुल क्षेत्रफल लगभग 18 एकड़ है। यहां जमाअत की सबसे बड़ी मस्जिद, "मस्जिद बैत-उर-रहमान" , का निर्माण 1994 में पूरा हुआ था। इस मस्जिद में लगभग 1500 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस केंद्रीय परिसर में मस्जिद के अलावा जमाअत के दफ्तर, मिशन हाउस, मल्टी-परपस हॉल, लाइब्रेरी, मीटिंग रूम, केंद्रीय किचन, बुक स्टोर, गेस्ट हाउस, और विभिन्न रिहायशी अपार्टमेंट्स भी हैं। इसके अलावा, Masroor Teleport Earth Station MTA और MTA USA स्टूडियो भी बनाए गए हैं।

हज़ूर-ए-अनवर के ठहरने के दौरान, विभिन्न स्थानों पर बड़े-बड़े टेंट लगाए गए थे, जिनमें कुछ नमाज़ अदा करने के लिए थे और कुछ में भोजन का इंतज़ाम किया गया था। एक समय में हज़ारों लोगों को भोजन कराने की व्यवस्था की गई थी। मर्दों और औरतों की अलग-अलग रजिस्ट्रेशन और COVID19- टेस्ट के लिए भी अलग-अलग इंतज़ाम किए गए थे। इस समय, सैकड़ों ख़ुद्दाम और लजनाः की कार्यकर्ताएँ विभिन्न ड्यूटियों को अंजाम दे रही थीं। सुरक्षा व्यवस्था के लिए भी विभिन्न विभाग काम कर रहे थे।

"मस्जिद बैतुर्रहमान" को रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया था, जिससे एक बहुत खूबसूरत दृश्य उत्पन्न हो रहा था। शाम होते ही मस्जिद के आस-पास का पूरा इलाका रोशन हो जाता था।

कार्यक्रम के अनुसार, रात 8 बजे, हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने मस्जिद बैत-उर-रहमान में तशरीफ लाकर मगरिब और इशा की नमाज़ों को मिलाकर अदा किया। नमाज़ों की अदायगी के बाद, हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

शेष ..

★ ★ ★

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि चंद्र ग्रहण के समय गर्भवती महिला को नहीं सोना चाहिए और न ही कोई चाकू, छुरी आदि का इस्तेमाल करना चाहिए। इस बात की क्या सच्चाई है?

क्या सुन्नत और नफ्ल नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकातों में सूरः फातेहा के साथ कुरआन-ए-करीम का कोई हिस्सा पढ़ना ज़रूरी है?

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह कथन कि "मैं उस समय भीख़ातमन नबिय्यीन था जब हज़रत आदम अपनी उत्पत्ति के शुरुआती चरणों में थे," और हदीस-ए-क़ुद्सी "لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْاَفْلَاكَ" की व्याख्या।

क्या किसी बीमार इंसान की जान बचाने के लिए सुअर के दिल का ट्रांसप्लांट इंसानी शरीर में करना जायज़ है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-33)

प्रश्न: एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (अल्लाह उनकी मदद और सहायता करें) की खिदमत में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की व्याख्या से गर्भवती महिलाओं पर चंद्र ग्रहण के प्रभाव के बारे में एक उद्धरण भेजा और पूछा कि कुछ लोग कहते हैं कि इस समय गर्भवती महिला न सोए और न ही कोई चाकू, छुरी आदि का इस्तेमाल करे। इसकी क्या वास्तविकता है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (अल्लाह उनकी मदद और सहायता करें) ने 10 मार्च 2021 को अपने पत्र में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया:

उत्तर : अल्लाह तआला कुरआन करीम में फ़रमाता है कि उसने अपने हुक्म से चांद, सूरज, ग्रहों और सितारों को इंसान की सेवा में लगाया है। इसलिए इन खगोलीय पिंडों से निकलने वाली किरणें और कण पृथ्वी और उस पर मौजूद वस्तुओं पर अलग-अलग तरीकों से प्रभाव डालते हैं। सामान्य जीवन में सूरज की ओर देखने से हमारी दृष्टि पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन सूर्य ग्रहण के समय कुछ परिस्थितियों में सूरज की ओर देखना दृष्टि हानि का कारण बन सकता है।

इसी तरह, हमारे अनुभव में यह भी है कि सूरज की रोशनी कई तरह की बीमारियों को दूर करने का कारण बनती है और यह फलों, फूलों, सब्ज़ियों और फ़सलों पर विभिन्न प्रकार से असर डालती है। इसके अलावा, चाँद की रोशनी भी फलों में मिठास पैदा करने और कई सब्जियों और फलों-फूलों पर प्रभाव डालती है।

हालांकि, विज्ञान की अब तक की खोज चंद्र ग्रहण के गर्भवती महिलाओं पर प्रभाव को नकारती है, लेकिन वैज्ञानिक इस बात को मानते हैं कि चाँद की रोशनी नींद पर असर डालती है। इसी प्रकार, सूरज से निकलने वाले विशेष प्रकार के लाखों "न्यूट्रिनो" नामक कण मानव शरीर में प्रवेश करते हैं और शरीर के अंदर मौजूद परमाणुओं को अवशोषित करके उनमें कुछ बदलाव लाते हैं। लेकिन यह बदलाव मानव शरीर या गर्भवती महिला के भ्रूण पर कोई बुरा प्रभाव नहीं डालता है।

मानव ज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान अल्लाह तआला के असीमित ज्ञान की तुलना में बहुत ही सीमित है, और हम जानते हैं कि वैज्ञानिक शोध समय के साथ बदलते रहे हैं और आज भी उनमें परिवर्तन होता रहता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि दिन और रात खगोलीय पिंडों के प्रभाव का प्रकट रूप हैं, लेकिन इसके अलावा भी सूर्य, चंद्रमा और सितारों के प्रभाव हैं। और इनसे ऐसी ताक़तें भी उत्पन्न होती हैं जो आँखों से न दिखने वाली किरणों के अलावा अन्य माध्यमों से भी इंसान पर असर डालती हैं, जैसे कि विद्युत या चुंबकीय प्रभाव। और इसके अलावा भी कई प्रकार के प्रभाव होते हैं, जिन्हें विज्ञान दिन-ब-दिन खोज रही है, और कुछ प्रभाव शायद विज्ञान कभी भी खोज न सके। (तफ़्सीर-ए-कबीर, ख़ंड 4, पृष्ठ 138)

सैय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अपनी विभिन्न पुस्तकों में कुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं के आलोक में चंद्रमा, सूर्य, सितारों और ग्रहों के पृथ्वी और इसके निवासियों पर प्रभाव के विषय को बड़ी विस्तार से समझाया है। "तौफ़ा गोलडविया" में हज़रत मसीह मऊद (अलैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं : "ये सितारे सिर्फ़ सजावट के लिए नहीं हैं, जैसा आम लोग समझते हैं, बल्कि इनमें प्रभाव भी हैं। जैसा कि आयत وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا (हामिम् सिजदा: 13) के हिफ़्ज़न शब्द से ज़ाहिर होता है। अर्थात कि इन सितारों का भी दुनिया के संरक्षण में योगदान है, जैसा कि मानव स्वास्थ्य में दवा और भोजन का योगदान होता है। ये सितारे केवल अल्लाह की अनुमति से ही काम करते हैं। उनकी प्रभावशीलता अल्लाह के हाथ में है। इसलिए असल और सच्चाई यह है कि सितारों का प्रभाव होता है, जो पृथ्वी पर असर डालता है।"

(तौफ़ा गोलडविया, रूहानी ख़ज़ायन, खंड 17, पृष्ठ 282-283, हाशिया)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस विषय पर विस्तार से बताते हुए कहते हैं:

"ध्यान रखें कि विज्ञान की वर्तमान शोध ने 'स्पेक्ट्रम' नामक एक उपकरण के माध्यम से, जो रोशनी की किरणों को विभाजित कर उन्हें अलग-अलग करता है, यह जानकारी प्राप्त की है कि कौन से तारे में कौन-सी धातुएं मौजूद हैं और किसमें कौन-सी। इससे यह पता चलता है कि सिर्फ़ रोशनी ही नहीं, बल्कि रोशनी के साथ-साथ विभिन्न धातुओं का प्रभाव भी पृथ्वी पर आता रहता है और उनका दुनिया के लोगों के दिमाग़ और शक्तियों पर अलग-अलग असर पड़ता है। चाँद की किरणों का प्रभाव भी कई रूपों में पृथ्वी पर प्रकट होता रहता है। हमारे देश में आमतौर पर यह माना जाता है कि जब चंद्र ग्रहण पूर्ण रूप से होता है, तो इसका गर्भवती महिलाओं पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए ऐसी स्थिति में गर्भवती महिलाएं अपने कमरों से बाहर नहीं निकलतीं। हालांकि इसे आमतौर पर एक वहम समझा जाता है, लेकिन मैंने इस प्रश्न पर ख़ास ध्यान दिया है और देखा है कि जब चंद्र ग्रहण पूर्ण होता है, तो इसके बाद कई महिलाओं की प्रसव पीड़ा बेहद कष्टकारी होती है और उनमें से कई की मृत्यु भी हो जाती है। मैं यह नहीं कह सकता कि कष्ट झेलने वाली महिलाएं वे हैं जिन्होंने इस समय में चाँद को देखा या इसके बिना भी उन पर इसका प्रभाव पड़ता है, लेकिन मैंने कई बार इसका अनुभव किया है और दूसरों से भी इसका अनुभव साझा किया है, जिन्होंने अपने अनुभव से इस बात की पुष्टि की है।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, खंड 4, पृष्ठ 138-139)

इसलिए यह साबित होता है कि चाँद, सूरज और अन्य ग्रहों एवं सितारों के प्रभाव पृथ्वी और इसके निवासियों पर असर डालते हैं, लेकिन ग्रहण के समय गर्भवती महिला का छुरी-चाकू आदि का इस्तेमाल करने या उस समय सोने या न सोने से इसका कोई संबंध नहीं है। यह सिर्फ़ अंधविश्वास हैं।

प्रश्न : एक मित्र ने सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकातों में सूरह फातिहा के साथ क़ुरआन का कोई हिस्सा पढ़ने के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मार्गदर्शन मांगा। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 10 मार्च 2021 को अपने पत्र में निम्नलिखित मार्गदर्शन दिया :

उत्तर : हदीसों में जिस प्रकार फ़र्ज़ नमाज़ की केवल पहली दो रकातों में सूरह फातेहा के बाद क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ने की बात स्पष्ट रूप से पाई जाती है, उसी तरह हदीस की किताबों, ख़ासकर सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम में कहीं भी यह स्पष्ट निर्देश नहीं मिलता कि सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की सभी रकातों में सूरह फातेहा के साथ क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ा जाना अनिवार्य है।

फ़ुक़हा (इस्लामी विधिवेत्ताओं) के बीच इस पर मतभेद है। उदाहरण के लिए, मलकी और हंबली मत के अनुयायी सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की सभी रकातों में सूरह फातेहा के साथ क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ते हैं, जबकि हनफ़ी और शाफ़ई मत के

अनुयायी तीसरी और चौथी रकातों में सूरह फातेहा के बाद क़ुरआन का कोई हिस्सा नहीं पढ़ते।

हज़रत ख़लीफ़ातुल् -मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह के अनुसार, जैसा कि आपने अपने पत्र में भी उल्लेख किया है, इस मामले में फ़र्ज़ और सुन्नत नमाज़ में कोई भेद नहीं है। जिस प्रकार फ़र्ज़ नमाज़ की केवल पहली दो रकातों में सूरह फातेहा के बाद क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ा जाता है, उसी तरह सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ों की भी केवल पहली दो रकातों में ही सूरह फातेहा के बाद क़ुरआन का कुछ हिस्सा पढ़ा जाएगा, और तीसरी और चौथी रकातों में केवल सूरह फातिहा पर ही संतोष किया जाएगा। और यही मेरा मत है।

प्रश्न : एक मित्र ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन की व्याख्या हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मांगी कि "मैं उस समय भी ख़ातमन नबिय्यीन था जब हज़रत आदम अपनी सृष्टि के बिल्कुल आरंभिक चरणों में थे।" इसके साथ ही उस मित्र ने इस विषय पर दो हदीसों का उल्लेख भी किया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 10 मार्च 2021 को अपने पत्र में निम्नलिखित मार्गदर्शन दिया :

उत्तर: हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ातमन नबिय्यीन होने के अद्वितीय और ऊंचे दर्जे के बारे में हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह कथन :

"إِنِّي عِنْدَ اللهِ مَكْتُوبٌ خَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَإِنَّ آدَمَ لَمُنْجَدِلٌ فِي طِينَتِهِ।"

(मिश्कातुल् -मसाबीह, किताब-उल-फ़ज़ायल, बाब-ए-फ़ज़ायल सैय्यदुल-मुर्सलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

अर्थात, "मैं अल्लाह के यहाँ उस समय से ख़ातमन नबिय्यीन लिखा हुआ हूं जब आदम (अलैहिस्सलाम) अभी अपनी गूंथी हुई मिट्टी में ही पड़े थे।"

इसी प्रकार हदीस-ए-कुदसी :

"لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْأَفْلَاكَ."

(रूह-उल-मानी, अज़ अलामा आलूसी, खंड 1, पृष्ठ 70, तफ़्सीर सूरह फातेहा, दारुल अहया अल-तुर्रास अल-अरबी, बेरूत संस्करण, 1999)

अर्थात, "हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), अगर तुम न होते, तो मैंने आकाशों को न बनाया होता।"

इन हदीसों की व्याख्या में आपने जो बिंदु स्पष्ट किया है कि इनसे यह पता चलता है कि एक लाख चौबीस हज़ार पैग़ंबर भी हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ातमन नबिय्यीन के दर्जे के बाद आए हैं, और पृथ्वी और आकाश भी अल्लाह ने हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस दर्जे पर निर्धरित करने के बाद बनाए हैं। यह बात सही है। पुराने विद्वानों ने भी इसका उल्लेख किया है, और इसे हमारी जमाअत के साहित्य में भी वर्णन किया गया है।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसिह् चतुर्थ (रहमहुल्लाह ताअला) ने देवबंद के संस्थापक हज़रत मोहम्मद क़ासिम नानौतवी का एक संदर्भ पेश किया कि "सबसे पहले *ख़ातिमुन्नबीयीन* के माने समझने चाहिए ताकि उत्तर को समझने में कोई कठिनाई न हो। आम लोगों की राय में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ातिम होना इस अर्थ में है कि आप का ज़माना पिछले अंबिया के बाद है और आप सब में आख़िरी नबी हैं। लेकिन समझदार लोगों पर यह बात स्पष्ट होगी कि वक़्त में पहले या बाद में होना अपने आप में कोई श्रेष्ठता नहीं है। फिर यह कैसे संभव है कि *لٰكِنْ رَسُوْلَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ*की प्रशंसा इस रूप में सही हो सके? हां, अगर इस विशेषता को प्रशंसा की विशेषताओं में न कहा जाए और इस स्थान को प्रशंसा का स्थान न माना जाए, तो बेशक, ख़ातिमियत केवल समय के अंत के आधार पर सही हो सकती है। लेकिन मुझे पता है कि इस्लाम के अनुयायियों में से कोई भी इस बात को स्वीकार नहीं करेगा... अगर फ़र्ज़ करो कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद कोई नबी पैदा हो जाए, तब भी मोहम्मदी ख़ातिमियत में कोई अंतर नहीं आएगा।"

इस बात की व्याख्या करते हुए, हज़रत हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं, "यही हमारा विश्वास है। हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो उस समय भी ख़ातिम थे जब इंसान का अभी *ब्लूप्रिंट* बन रहा था। वह अभी अपनी रचना के निर्माण चरणों से गुजर रहा था। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं, 'मैं उस समय भी ख़ातिमुन्नबीयीन था जब आदम अपनी मिट्टी में गड़ा हुआ था।' कितना महान विचार है। ख़ातिमियत समय से ऊपर है, समय के अधीन नहीं है। ख़ातिम से पहले भी कोई नबी उसकी नबूवत का मुक़ाबला नहीं कर सकता और न ही बाद में कोई ऐसा नबी आ सकता है जो उसकी बराबरी कर सके। लेकिन बाद में आना तभी संभव है जब वह पूरी तरह से आपका अनुयायी हो, अन्यथा बिल्कुल भी नहीं होगा। गुलाम आ सकता है, लेकिन ग़ैर-गुलाम नहीं आ सकता। और पहले भी वही नबी हैं जिन पर आपकी मुहर है। लोग इस अवधारणा को समझने की कोशिश नहीं करते, यह बहुत ही महान विषय है। मुसलमान पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ातिम कह देते हैं। कहते हैं कि यह बहुत महान और अद्वितीय स्थान है जो किसी नबी को प्राप्त नहीं हुआ। उनसे पूछो कि इसका प्रमाण क्या है? तो उन उलेमा से पूछकर देखिए, उनके पास कोई प्रमाण नहीं है। उन्हें कैसे पता चला, वे दुनिया में कैसे इसे साबित कर सकते हैं? यहाँ जब पश्चिमी दुनिया की सभाओं में लोग मुझसे यह प्रश्न पूछते हैं कि 'तुम्हारे पास इसका क्या प्रमाण है?' मैं कहता हूँ, 'मैं तुम्हें प्रमाण दिखाता हूँ।' इसका उत्तर निकाल कर दिखाओ। दुनिया में जितने नबी आए हैं, एक भी ऐसा नबी नहीं है जिसने अपने सिलसिले के अलावा दूसरे नबियों की पुष्टि की हो। दीया लेकर ढूंढो और मुझे दिखाओ, एक भी नहीं।"

"آمَنْتُ بِاللهِ... وَ كُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ"आमंतु बिल्लाह... व कुतुबिहि व रसुलेही में सभी नबियों और सभी रसूलों पर ईमान को अनिवार्य बताया गया है। वह एक ही हैं, हमारे आक़ा और मौला हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। तो पुष्टि की मुहर किसके हाथ में है? हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिवा किसी और का हाथ दिखाओ। यही ख़ातिमियत है। इस ख़ातिमियत की ऊँची और सर्वोच्च अवधारणा को छुए बिना तुम समय की समाप्ति की ओर आ गए हो और समझ ही नहीं पा रहे कि क्या कह रहे हो। समय की समाप्ति कोई प्रशंसा का स्थान नहीं है। लेकिन जो समाप्ति क़ुरआन ने बयान की है, वह ऐसी प्रशंसा है जिसकी दुनिया में कोई मिसाल नहीं मिल सकती। आज़माकर देख लो। मैं पूरी दुनिया को बता रहा हूँ। दुनिया के किसी भी धर्म को चुनौती दो कि यदि उनका कोई भी नबी ख़ातिम था, तो उसकी पुष्टि दूसरे नबियों पर दिखाओ। हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सिवा कोई नहीं है जो ख़ातिमुन्नबीयीन हो, जो सभी नबियों का प्रमाण हो। इसलिए भविष्य में भी अगर कोई नबी आएगा, तो आपकी पुष्टि के बिना नहीं आ सकता। यही वजह है कि जब हम कहते हैं कि *उम्मती नबी*, तो हमारा मतलब *इमाम महदी* और वह *मसीह मौऊद* होते हैं जिनकी भविष्यवाणी की गई है। इसके सिवा हमारी कोई और मुराद नहीं होती, क्योंकि इस पर आपकी मुहर लगी हुई है। हमने *इमाम महदी* के सिवा किसी को नबी कब कहा है? बस वही इमाम महदी हैं, और हम उन्हें उम्मती नबी कहते हैं।"

(मुलाक़ात प्रोग्राम, 31 जनवरी 1994, गैर-मत्बूआ)

जहाँ तक आपने हदीसों के संदर्भ पूछे हैं, तो *मिश्कात* में एक हदीस इस तरह दर्ज है:

عَنِ الْعِرْبَاضِ بْنِ سَارِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: إِنِّي عِنْدَ اللهِ مَكْتُوبٌ: خَاتَمُ النَّبِيِّينَ وَإِنَّ آدَمَ لَمُنْجَدِلٌ فِي طِينَتِهِ وسَأُخْبِرُكُمْ بِأَوَّلِ أَمْرِي دَعْوَةُ إِبْرَاهِيمَ وَبَشَارَةُ عِيسَى وَرُؤْيَا أُمِّيَ الَّتِي رَأَتْ حِينَ وَضَعَتْنِي وَقَدْ خَرَجَ لَهَا نُورٌ أَضَاءَ لَهَا مِنْهُ قُصُورُ الشَّامِ.

अर्थात : हज़रत अरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हो से मरवी है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि, "मैं अल्लाह के पास से उस वक्त से *ख़ातिमुन्नबीयीन* लिखा हुआ हूँ जब आदम (अ.स.) अभी अपनी मिट्टी में पड़े हुए थे। और मैं तुम्हें बताता हूँ कि मेरी पैदाइश की शुरुआत हज़रत इब्राहीम (अ.स.) की दुआ, हज़रत ईसा (अ.स.) की बशारत और मेरी माँ का वह ख्वाब है, जो उन्होंने मेरी पैदाइश के वक्त देखा था, कि उनकी आँखों के सामने एक नूर ज़ाहिर हुआ था, जिसने शाम के महलों को रौशन कर दिया था।"

(मिश्कात अल् मसाबिह किताब अल-फ़ज़ायल बाब फ़ज़ायल सैय्यद अल-मुरसेलीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)

हदीस-ए-कुदसी *لَوْلَاكَ لَمَا خَلَقْتُ الْأَفْلَاكَ* को अल्लामा अलूसी और अल्लामा इस्माईल हक़्की ने अपनी तफ़्सीरों में दर्ज किया है। हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) पर भी अल्लाह ने इन्हीं अल्फाज़ में वह्यी भेजी है: *इन्नी माअल इकराम, लव्लाक लमा ख़लक़्तुल अफ्लाक* । हज़रत मसीह मौऊद (अ.स.) ने इसका अपनी किताबों में भी उल्लेख किया है।

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि हाल ही में अमेरिका के डॉक्टरों ने इंसानी जान बचाने के लिए एक बीमार इंसान के शरीर में सूअर के दिल का प्रत्यारोपण किया है। क्या ऐसा करना जायज़ है? हज़रत ख़लीफ़ा ने अपने मकतूब में इस प्रश्न का उत्तर दिया:

उत्तर: मैंने पहले भी इस बारे में बताया है कि जहाँ इंसानी जान बचाने का प्रश्न हो, वहाँ इस प्रकार के इलाज में कोई हर्ज नहीं है। शराब को भी इस्लाम ने हराम

करार दिया है, लेकिन जिन दवाइयों से इंसानी जान बचाई जा सकती है, उनमें इसका इस्तेमाल जायज़ है, क्योंकि यह सब इज़्तिरारी हालतें हैं। अल्लाह तआला ने क़ुरआन में जहाँ सूअर के गोश्त की हरामियत वर्णन की है, वहीं मजबूरी की हालत में इसके इस्तेमाल की इजाज़त भी दी है।

इसलिए इलाज के तौर पर सूअर का दिल इंसानी शरीर में लगाना जो एक इज़्तिरारी हालत है, जायज़ है और इसमें कोई मना नहीं।"

पुराने उलेमा और फ़ुक़्हा में से कुछ का कहना है कि सुअर का मांस खाना मना है, लेकिन इसके बाल और खाल आदि का उपयोग जायज़ है, और कुछ ने तो यहां तक कहा है कि इसकी चर्बी खाना भी जायज़ है। हालांकि, हमारे नज़रिए से सामान्य परिस्थितियों में सुअर की किसी भी चीज़ का ऐसा उपयोग जो खाने के अर्थ में शामिल हो, जायज़ नहीं है। इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः बकरा की आयत 174 की तफ़सीर में फ़रमाते हैं: "इस आयत में जो *لَحْمُ الْخِنْزِيْرِ*(सुअर का मांस) कहा गया है, इसके बारे में फ़ुक़्हा में इख़्तिलाफ़ है कि क्या मांस में चर्बी भी शामिल है या नहीं। जहां तक ज़ुबान का प्रश्न है, *شَحْم* (चर्बी) को *لَحْم* से अलग प्रकार का माना जाता है। लेकिन मुफ़स्सेरीन (तफसीर करने वाले) कहते हैं कि मांस के नाम में चर्बी शामिल है। हालांकि मुफ़स्सेरीन का दलील ज़ौकी (स्वाद) है और लुग़त (भाषा) वालों की बात इस मामले में ज़्यादा काबिल-ए-एतबार है। लेकिन फिर भी मेरे नज़रिए से सुअर की चर्बी जायज़ नहीं है। और इसकी दलील मेरे पास यह है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि मरे हुए जानवर की चर्बी हराम है। और सुअर की हरामियत और मरे हुए जानवर की हरामियत एक ही आयत में और एक ही अल्फ़ाज़ में बयान की गई है। इसलिए दोनों का फ़ैसला एक प्रकार का समझा जाएगा। लेकिन सुअर की खाल का उपयोग जायज़ होगा क्योंकि वह खाई नहीं जाती।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4, तफ़सीर सूरः नहल, पृष्ठ : 260)

इसी तरह इस प्रश्न पर कि *टूथब्रश* के बारे में आपका क्या ख्याल है, जो अक्सर सुअर के बालों से बनाए जाते हैं? का उत्तर देते हुए हज़रत मस्लेह मौउद (रज़ि.) ने फ़रमाया: "हमारी तहक़ीक़ात तो यह है कि सभी ब्रश सुअर के बालों के नहीं होते। बाकी सुअर के बालों का इस्तेमाल शरई नज़र से जायज़ है। क्योंकि सुअर का मांस हराम किया गया है, जो खाने की चीज़ है। और बाल कोई नहीं खाता। एक बड़े बुज़ुर्ग ने तो यहां तक कहा है कि सुअर की चर्बी भी जायज़ है क्योंकि सुअर का मांस हराम किया गया है, न कि चर्बी। दूसरे फ़ुक़्हा ने कहा है कि यह फ़तवा देने वाले की बुज़ुर्गी में तो कोई बात नहीं है, लेकिन उनका यह तर्क गलत है। उन्हें ज़बान के लिहाज़ से गलती लगी है। क्योंकि चर्बी मांस में शामिल होती है। उन्होंने इसे अलग समझा है।"

(अख़बार अल्फ़ज़्ल, कादियान, दारुल अमान, संख्या 5, भाग 16, 17 जुलाई 1928, पृष्ठ 7)

यहूदी धर्म में भी सुअर की वृद्धि और उसका खाना हराम है, लेकिन इंसानी जान बचाना क्योंकि बुनियादी अहमियत का हक़दार है, इसलिए आधुनिक समय के यहूदी उलेमा के नज़र में सुअर से दिल प्राप्त करना यहूदी खाने के नियमों की किसी भी तरह से खिलाफ़वर्ज़ी नहीं है।

इसी तरह आधुनिक समय के कुछ मुस्लिम उलेमा ने भी यही फ़तवा दिया है कि अगर मरीज़ की जान ख़त्म होने, उसके किसी अंग की विफलता, बीमारी के फैलने और गंभीर होने, या शरीर को गंभीर नुकसान पहुँचने का ख़तरा हो, तो सुअर के दिल के वाल्व इंसान को लगाए जा सकते हैं।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

ख़ुदा त'आला की हस्ती

अंग्रेज़ी और पश्चिमी क़ौमें दुनिया की तलाश और ख्वाहिश में लगी हुई हैं। शुरू में एक वहम और ख़याली उम्मीद पर काम शुरू करती हैं। सैकड़ों जानें बर्बाद होती हैं, हज़ारों-लाखों रुपये बर्बाद होते हैं। आख़िरकार एक बात पा ही लेते हैं। फिर कितना अफ़सोस और ताज्जुब है उन पर जो कहते हैं कि ख़ुदा नहीं मिल सकता। किसने कोशिश की और फिर ख़ुदा को नहीं पाया? ख़ुदा तो मिलता है और बहुत जल्दी मिलता है, लेकिन उसे पाने वाले कहाँ???

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 42, एडीशन 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान में ख़िदमत की इच्छा रखने वाले ध्यान दें

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित। (30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2)(20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार (दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न)(20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) - (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
नज़रात दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान, पिन कोड: 143516
मोबाइल: 09888232530, 09682627592
दफ़्तर: 01872-501130
ई-मेल: diwan@qadian.in

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमपर खास तौर पर किस तरह शैतान के असर से महफ़ूज़ रखते हैं। बल्कि उल्टा यह बताता है कि नबियों पर शैतान का असर तो दूर की बात, शैतान तो उनसे मार खाता है।

और जब हम कुरआन करीम की यह आयत सामने रखें कि "إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ" (सूरः बनी इसराइल, आयत : 7), जिसका अर्थ है : "मेरे बंदों पर तुझे कभी काबू हासिल नहीं होगा", तो मेरे किए हुए माने ही सही साबित होते हैं और अन्य मफ़स्सिरों के किए हुए माने गलत साबित होते हैं। क्योंकि अगर शैतान किसी नबी की ज़ुबान पर, खासकर वह्यी (ईश्वरीय संदेश) की तिलावत के वक्त, कब्ज़ा कर ले, तो यह एक बहुत बड़ा "सुल्तान" (अधिकार) होगा, जिसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती।

हम देखते हैं कि आम इंसान जब किसी सरकार के अत्याचार का सामना करते हैं, तो वह उनके खिलाफ नारे लगाने से नहीं कतराते। फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि हज़रत मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, जो समस्त नबियों के सरदार थे, उनकी ज़ुबान पर शैतान ने कब्ज़ा कर लिया और नऊज़ुबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उनके मुंह से शिर्क (बहुदेववाद) वाले अल्फ़ाज़ निकलवा दिए। यह तो साफ तौर पर सूरः बनी इसराइल की आयत का विरोधाभास है, और कुरआन-ए-करीम की कोई आयत दूसरी आयत का खंडन नहीं कर सकती।

जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है: "अफ़ला यतदब्बरून अल-कुरआन, व-लव काना मिन इंदि ग़ैरिल्लाह लवजदू फ़ीहि इख़्तिलाफ़न कसीरन"

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا

(सूरह अल-निसा, आयत 83), अर्थात "क्या वे कुरआन पर गौर नहीं करते? अगर यह अल्लाह के अलावा किसी और का कलाम होता, तो इसमें बहुत बड़े विरोधाभास पाए जाते।"

कुछ लोग गलती से यह समझते हैं कि क्योंकि इस आयत में "कसीरन" का लफ़्ज़ है, तो इसके माने यह हैं कि अल्लाह के अलावा दूसरों के कलाम में बहुत से विरोधाभास होते हैं, लेकिन अल्लाह के कलाम में थोड़े बहुत विरोधाभास हो सकते हैं। जबकि "कसीरन" का माने अरबी भाषा में सिर्फ 'ज़्यादा' नहीं, बल्कि 'शानदार' या 'विशाल' भी होता है।

जैसे कि وَلَيْسَتِ الْكَثْرَةُ إِشَارَةً إِلَى الْعَدَدِ فَقَطْ بَلْ إِلَى الْفَضْلِ

"मुफ़रदात" में लिखा है: "व-लैसत अल-कसरह इशारा इलाल अदद फक़त बल इलल फ़ज़्ल", अर्थात कुरआन में जहां भी "कसीर" का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है, वहां सिर्फ संख्या में ज्यादा नहीं, बल्कि शान में बड़ा मतलब है।

कुरआन-ए-करीम में यह मानना कि एक तरफ़ वह कहता है कि मेरे नेक बंदों पर शैतान का कभी कोई क़ब्ज़ा नहीं होगा, और दूसरी तरफ यह कहा जाए कि हर नबी और रसूल पर शैतान का क़ब्ज़ा होता था और वह उनकी वह्यी में अपनी तरफ से कुछ मिला देता था, यह एक इतना बड़ा विरोधाभास है कि इसे कल्पना करना भी मुश्किल है।

इसलिए सूरः अल-निसा की आयत के मुताबिक़ इस तरह के माने बिल्कुल गलत और बेबुनियाद हैं, और कुरआन-ए-करीम की तालीमात के खिलाफ़ हैं। दूसरी व्याख्या आयत "وَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا" की यह है कि तर्कशास्त्र के क़ज़िया हमलिया के अनुसार मफहूम-ए-मुखालिफ (विपरीत निष्कर्ष) निकालना जिसे विपरीत अभिप्राय भी कहते हैं उचित नहीं होता। उदाहरण के तौर पर, यदि हम यह कहें कि किसी व्यक्ति का सिर बड़ा है, तो इस वाक्य से यह निष्कर्ष निकालना बिल्कुल उचित नहीं होगा कि उसके पैर छोटे हैं। इसी तरह, कुरआन-ए-करीम का यह दावा कि "وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا", जो एक क़ज़िया शर्तिया (शर्तीय कथन) पर आधारित है, इसे एक क़ज़िया हमलिया की शक्ल में लेने से यह अर्थ निकलता है कि अल्लाह के सिवाए जो कलाम है उसमें बड़ा विरोधाभास पाया जाता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि अल्लाह के कलाम में थोड़ा सा भी विरोधाभास होता है, क्योंकि यह निष्कर्ष तर्कशास्त्र के विपरीत होगा, जैसा कि हम ऊपर दिए गए उदाहरण से स्पष्ट कर चुके हैं।

फिर अल्लाह फ़रमाता है: "وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيمٍ", अर्थात काफिर (अविश्वासी) सत्य के बारे में संदेह में पड़े रहते हैं, यहां तक कि अचानक उनकी तबाही की घड़ी आ जाती है, या फिर उन पर वह दिन का अज़ाब (सज़ा) आ जाता है, जो अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ता।

देख लो, रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके हिजरत (प्रवासन) के समय कौन व्यक्ति था जो यह मानता था कि मक्का में रहने वाले कुछ गरीब लोग थोड़े ही समय में पूरे अरब पर हावी हो जाएंगे? लेकिन हिजरत के तुरंत बाद, अर्थात दूसरे ही साल, मक्का के वे रईस, जो इस्लाम को मिटा देने पर तुले हुए थे और जो गरीब मुसलमानों पर तरह-तरह के अत्याचार करते थे, बद्र के मैदान में ऐसे मारे गए, जैसे गांव की गलियों में पागल कुत्ते मारे जाते हैं।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के समय में भी ऐसा ही हुआ। उनके ज़माने में तुफ़ान आया, लेकिन तुफ़ान आने से पहले तक उनकी क़ौम हंसी उड़ाती रही। वे कहते थे कि हां, हम डूब जाएंगे और तुम बच जाओगे। अगर हम डूब गए, तो वह जगह कहां है जहां तुम भागकर जाओगे? लेकिन सालों-साल की इस हंसी-मज़ाक के बाद, जिसे बाइबिल ने कवितात्मक अंदाज़ में सैकड़ों साल का समय बताया है, अचानक तुफ़ान आया और वे लोग डूब गए, जो नूह अलैहिस्सलाम पर हंसा करते थे, और उनकी कश्ती (जहाज़) पहाड़ की चोटी पर जा ठहरी।

कुरआन करीम और बाइबल, दोनों से पता चलता है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से भागे, तो आखिरी समय तक उनकी क़ौम (समुदाय) के लोग यह नहीं समझ पा रहे थे कि उनके छुटकारे का समय आ गया है। फिरऔन (फ़िरौन नाम है) ने भी कहा कि यह थोड़े से लोग हैं। तुरंत फौजें इकट्ठी करो, यह हमसे भागकर कहां जा सकते हैं। जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम के लोगों ने फिरऔन की सेना को देखा, तो उन्होंने कहा, "इन्ना लमुद्रकून" अर्थात हम ज़रूर पकड़े जाएंगे। लेकिन वे लोग जो आधे घंटे पहले यह समझ रहे थे कि अब हम फिरऔन के हाथ से नहीं बच सकते, उसी आधे घंटे बाद उन्होंने देखा कि वही राजा के वज़ीर और सेना, जिनपर उसकी ताकत टिकी हुई थी, समुद्र की गहराइयों में डूबते हुए जा रहे हैं।

इस सज़ा (अज़ाब) की अहमियत और भी बढ़ जाती है जब हम देखते हैं कि फिरऔन उन राजाओं में से था जो हमेशा अपने चेहरे पर नक़ाब (घूंघट) ओढ़े रहते थे और लोगों के बीच यह मशहूर कर रखा था कि जो शख़्स राजा का चेहरा देख ले, वह कोढ़ी हो जाता है क्योंकि वह राजा की बेइज़्ज़ती करता है। इसीलिए वह हमेशा अपने चेहरे को नक़ाब से ढंके रखते थे, यह दिखाने के लिए कि हम इतने महान इंसान हैं कि हमारा चेहरा देखना भी किसी आम आदमी का काम नहीं। अगर राजा किसी शख़्स के लिए अपना नक़ाब उठा देता था, तो उसे बड़ा क़रीबी माना जाता था और वह अपनी क़ौम का सरदार बन जाता था। परंतु आज उसकी लाश काहिरा के म्यूज़ियम में पड़ी है, जिसे मैंने 1924 में अपनी आंखों से देखा। लेकिन जो भी उसे देखता है, वह अच्छे जज़्बात (भावनाओं) से नहीं, बल्कि नफ़रत और लानत के साथ देखता है और कहता है, "खबीस, तू था जो मूसा अलैहिस्सलाम को तकलीफ़ देता था।

"अल्लाह तआला की तरफ से जब सज़ा आती है, तो वह कभी-कभी इतनी अचानक आती है कि इंसान देखते ही देखते उसकी आग में जलकर राख हो जाता है। यही बात अल्लाह ने इस आयत में वर्णन की है कि ये लोग मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई में इसी तरह शक और संदेह में पड़े रहेंगे, यहां तक कि अचानक उनकी तबाही की घड़ी आ जाएगी और वे उससे भागने का कोई रास्ता नहीं पाएंगे। या फिर उन पर ऐसा अज़ाब नाज़िल होगा जो उनकी ताकत का कोई निशान तक बाकी नहीं रखेगा।

इसलिए, फ़तह मक्का भी एक घड़ी थी जो अचानक कुफ़्फ़ार मक्का पर आई और जिसने उनके समस्त गुरूर को इस तरह निकाल फेंका कि वे लोग जो मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथियों को इस्लाम की शुरुआत से ही तकलीफें देते आ रहे थे, इतने मजबूर और बेबस हो गए कि उन्होंने मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमसे दयनीय प्रार्थना की कि आप हम पर रहम करें और हमारे साथ वही सुलूक करें जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अपने भाइयों के साथ किया था। उनमें ऐसा बदलाव आया कि वही लोग जो कल तक मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के खून के प्यासे थे, आज आपकी हिफाज़त के लिए अपनी जानें कुर्बान करने लगे।

अज़ाब-ए-यौम-ए-अकीम से हज़रत इब्न अब्बास, मुजाहिद और क़तादा के नज़दीक बद्र की सज़ा मुराद है, जिसने कुफ़्फ़ार की जड़ें काटकर रख दीं और उनके रौब और दबदबे को मिट्टी में मिला दिया।

(तफ़्सीर-ए- कबीर, भाग 6, पृष्ठ 74, मुद्रित क़ादियान 2010)

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

इस यात्रा के लिए जारी किए गए बोर्डिंग पास पर भी Khilafat Flight 2022 लिखा हुआ था
बोर्डिंग पास पर यह शब्द दर्ज थे:
" Ahmadiyya Muslim Community USA 2020-1920 .100 Centennial Khilafat Flight 2022 in the Company of Hazrat Mirza Masroor Ahmad Khalifatul Masih V(aba)"

मैरीलैंड, बाल्टीमोर, और वाशिंगटन के अलावा, दक्षिण वर्जीनिया, उत्तर वर्जीनिया, न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया, लॉस एंजिलिस, शिकागो, ह्यूस्टन, डेट्रॉइट, और अन्य स्थानों से जमाअतों के सदस्य पहुंचे थे। इसके अलावा, मेक्सिको और प्यूर्टो रिको से भी लोग अपने प्यारे आका के स्वागत के लिए आए थे। कई जमाअतों और क्षेत्रों से लोग लंबी यात्राएं करके यहां पहुंचे थे, जैसे मियामी से 1078 मील, तुलसा से 1220 मील, ह्यूस्टन से 1422 मील और लॉस एंजिलिस से 2653 मील की दूरी तय करके लोग पहुंचे थे।

जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका ने आज की इस यात्रा के लिए भी American Airlines के एक चार्टर्ड विमान ERJ175 का इंतजाम किया था। हज़ूर-ए-अनवर की आमद से पहले सभी यात्रियों का सामान विमान में लोड किया जा चुका था। यात्रा करने वालों की संख्या 69 थी, जिनमें हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़, हज़रत बेगम साहिबा, और क़ाफ़िले के अन्य सदस्य शामिल थे।

अमेरिका दौरे का चौदहवां दिन, 9 अक्टूबर 2022, रविवार
डलास से प्रस्थान और मस्जिद बैतुल् रहमान (मैरीलैंड) में आगमन

हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने सुबह 6:10 बजे "मस्जिद बैत-उल-इकराम" में आकर फज्र की नमाज़ पढ़ाई। अपने प्यारे आका की इमामत में नमाज़ अदा करने वालों की संख्या हजारों में थी। मस्जिद के दोनों हॉल मर्दों और औरतों से भरे हुए थे। बाहर लगे तंबू भी नमाज़ियों से भरे हुए थे और एक बड़ी संख्या के लिए मस्जिद के खुले प्रांगण में भी सफें बिछाई गई थीं। यह पूरा प्रांगण भी नमाज़ियों से भर गया था।

अमेरिका की विभिन्न जमाअतों और दूरदराज़ के क्षेत्रों से लोग हजारों मील का सफर तय करके डलास आकर बैठे हुए थे। हज़ूर-ए-अनवर की इमामत में नमाज़ें अदा कर रहे थे और उनकी एक झलक पाने का कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने दे रहे थे। नमाज़ों की अदायगी के बाद जब हज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह की ओर जा रहे होते हैं, तो रास्ते के दोनों तरफ मर्द और औरतें अपने हाथ हिलाते हुए अपनी वफ़ादारी और ख़ुशी का इज़हार करते हैं। "अस्सलामु अलैकुम हज़ूर" और "इन्नी म'अक़ा या मसूर" की आवाज़ें उनके दिल की गहराइयों से निकल रही होती हैं। यह एक अत्यंत रूहानी और बरकतों से भरा माहौल होता है, जिसमें हर कोई, चाहे वह मर्द हो या औरत, बच्चा हो या बूढ़ा, छोटा हो या बड़ा, सब लाभ उठा रहे होते हैं।

नमाज़ों की अदायगी के लिए सभी की इच्छा होती है कि उन्हें मस्जिद के अंदर जगह मिले। लेकिन मस्जिद के अंदर जगह सीमित होती है, जहां केवल 225 लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं, जबकि नमाज़ पढ़ने वालों की संख्या हज़ारों में होती है। डलास (Dallas) में यह दृश्य हर रोज़ देखने को मिलता था कि नमाज़ के समय से दो-दो, तीन-तीन घंटे पहले ही मस्जिद के अंदर जाने के लिए लाइनें लगनी शुरू हो जाती थीं, ताकि मस्जिद के अंदर जाकर अपने प्यारे आका की इमामत में नमाज़ पढ़ने का मौका सुनिश्चित हो सके। यह ख़िलाफ़त के दीवाने और फ़िदाई दो-दो, तीन-तीन घंटे तक सिर्फ़ इस उम्मीद में कतारों में खड़े रहते थे कि मस्जिद के अंदर जाकर नमाज़ अदा कर सकें।

डलास (Dallas) में जुमा के दिन तो यह नज़ारा और भी खास था। फज्र की नमाज़ सुबह साढ़े छह बजे थी और इसके बाद पांच से सात मिनट का एक छोटा सा दर्स होता था। जब नमाज़ और दर्स खत्म हुए और मस्जिद जुमा की तैयारी के लिए खाली हो गई, तभी जुमा की नमाज़ के लिए मस्जिद के बाहर कतारें लगनी शुरू हो गईं। जबकि जुमा का समय दोपहर 1 बजे था। ये फ़िदाई और आशिक़ पाँच-छह घंटे पहले ही मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए लाइनों में खड़े हो गए। एक शख्स ने कहा कि "पता नहीं, ज़िंदगी में दोबारा यह मौका मिलेगा या नहीं, इसलिए आज हम इस मौके को गंवाना नहीं चाहते। हम पाँच-छह घंटे इंतज़ार करेंगे ताकि मस्जिद के अंदर जा सकें।" आज अगर इस धरती पर नज़र दौड़ाएं, तो ऐसी मोहब्बत, इश्क़ और वफ़ादारी की कहानियाँ जमाअत अहमदिया के अलावा कहीं और देखने को नहीं मिलेंगी।

मस्जिद बैत-उर-रहमान, मैरीलैंड में आगमन

आज के कार्यक्रम के अनुसार डलास से मैरीलैंड की "मस्जिद बैत-उर-रहमान" के लिए प्रस्थान था। सुबह से ही बड़ी संख्या में अहबाब अपने आका को विदा करने के लिए जमा थे।

10:50 बजे हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ़ लाए। बाहर मौजूद अहबाब का हुजूम लगातार नारे लगा रहा था। हज़ूर-ए-अनवर की रिहाइशगाह के बाहर तीन परिवार खड़े थे, जिनके घरों में क़ाफ़िले के मेहमान ठहरे हुए थे। हज़ूर-ए-अनवर कुछ देर के लिए वहां रुके और इन परिवारों से बातचीत की। इनमें से एक परिवार ने हज़ूर-ए-अनवर से गुज़ारिश की कि वह उनके बेटे की शर्ट पर दस्तख़त कर दें। हज़ूर-ए-अनवर ने शफ़क़त के साथ उस बेटे की शर्ट पर, जो उसने पहनी हुई थी, दस्तख़त किए।

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अहबाब के बीच से गुज़रते हुए मस्जिद बैत-उल-इकराम के सामने खुले मैदान में तशरीफ़ लाए। वहां, कार्यक्रम के अनुसार, स्थानीय मज्लिस-ए-आमला जमाअत डलास, ज़ियाफ़त टीम, ख़ुद्दाम की सुरक्षा टीम और अन्य कार्यकर्ताओं ने समूहों की सूरत में तस्वीरें खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

मर्द और औरतें लगातार नारे बुलंद कर रहे थे और बच्चियां विदाई नज़्में पढ़ रही थीं। हज़ूर-ए-अनवर शफ़क़त के साथ एक बार फिर अपने इन आशिक़ों के बीच तशरीफ़ लाए और अपना हाथ उठाकर उनके नारों और सलाम का उत्तर दिया। कुछ देर के लिए हज़ूर-ए-अनवर उन बच्चियों के पास भी रुके, जो नज़्में पढ़ रही थीं।

सुबह 11 बजे हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने दुआ कराई और सभी को "अस्सलामो अलैकुम" कहा। इसके बाद क़ाफ़िला डलास (Dallas) के इंटरनेशनल एयरपोर्ट फोर्ट वर्थ के लिए रवाना हुआ।

जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका ने आज की इस यात्रा के लिए भी American Airlines के एक चार्टर्ड विमान ERJ175 का इंतेजाम किया था। हज़ूर-ए-अनवर की आमद से पहले सभी यात्रियों का सामान विमान में लोड किया जा चुका था। यात्रा करने वालों की संख्या 69 थी, जिनमें हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़, हज़रत बेगम साहिबा, और क़ाफ़िले के अन्य सदस्य शामिल थे। इसके अलावा, श्रीमान अमीर साहिब जमाअत-ए-अहमदिया यू.एस.ए, श्रीमान डॉक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब, श्रीमान वसीम मलिक साहिब और श्रीमान अज़हर हनीफ़ साहिब (नायब अमीर और अमेरिका के मौलवी इंचार्ज) भी इस विमान में सवार थे।

इस यात्रा में इंतिसार मलही साहिब (नायब सदर ख़ुद्दामुल् अहमदिया अमेरिका), डॉक्टर फ़ैज़ान अब्दुल्लाह (चेयरमैन मेडिकल एसोसिएशन यूएसए), श्रीमान मुनैम नईम साहिब (चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमेरिका), और श्रीमान शरीफ़ ओउदा साहिब (अमीर जमाअत कबाबीर) भी शामिल थे। इसके अलावा, डॉक्टर तनवीर अहमद साहिब (ड्यूटी डॉक्टर) भी साथ यात्रा कर रहे थे।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 31-07 November 2024 Issue No. 44-45

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

महिला प्रतिनिधियों में अम्मत-उल-मुसव्वर साहिबा और नक़ाशा अहमद साहिबा (मज्लिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह अमेरिका) थीं। साथ ही, विभिन्न जमाअतों के अध्यक्ष, अन्य पदाधिकारी, राष्ट्रीय आमला के कुछ सचिव, और मौलवी साहिबान भी इस यात्रा में शामिल थे। American Airlines के एरिक अडूचियो इस यात्रा के कोऑर्डिनेटर थे।

इस यात्रा के लिए जारी किए गए बोर्डिंग पास पर भी Khilafat Flight 2022 लिखा हुआ था। फ्लाइट का नंबर KF2022- था। बोर्डिंग पास पर यह शब्द दर्ज थे: " Ahmadiyya Muslim Community USA 2020-1920 .100 Centennial Khilafat Flight 2022 in the Company of Hazrat Mirza Masroor Ahmad Khalifatul Masih V(aba)।"

हज़ूर-ए-अनवर का एयरपोर्ट पर आगमन 11:40 बजे हुआ। विमान को एयरपोर्ट के एक प्राइवेट क्षेत्र में पार्क किया गया था, जहां से हज़ूर-ए-अनवर और हज़रत बेगम साहिबा विशेष व्यवस्था के तहत विमान में सवार हुए।

विमान डलास के फोर्ट वर्थ इंटरनेशनल एयरपोर्ट से 12:10 बजे बाल्टीमोर (Baltimore) के इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना हुआ। लगभग दो घंटे और 35 मिनट की उड़ान के बाद, विमान बाल्टीमोर (मैरीलैंड) में स्थानीय समय के अनुसार 3:45 बजे उतरा। मैरीलैंड का समय डलास (टेक्सास) से एक घंटा आगे है।

4 बजे हज़ूर-ए-अनवर एयरपोर्ट से बाहर तशरीफ़ लाए, जहां श्रीमान फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब (नायब अमीर अमेरिका), श्रीमान मुख़्तार अहमद मलही साहिब (नेशनल जनरल सेक्रेटरी), श्रीमान सय्यद शमशाद अहमद नासिर (मौलवी सिलसिला अमेरिका), और श्रीमान डॉक्टर अदील अब्दुल्लाह साहिब (सदर मजलिस ख़ुद्दामुल् अहमदिया अमेरिका) ने हज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया। इसके बाद, एयरपोर्ट से जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका के केंद्र मस्जिद बैत-उर-रहमान के लिए प्रस्थान हुआ।

अपने प्यारे आका के स्वागत और हज़ूर-ए-अनवर का दीदार करने के लिए अमेरिका के इस क्षेत्र के दूर-दराज़ शहरों और बस्तियों से हज़ारों लोग सुबह से ही बैत-उर-रहमान पहुंचने लगे थे। वहां मर्द, औरतें, बच्चे और बुजुर्गों का एक विशाल हुजूम जमा था, जो अपने प्यारे और महबूब आका के दीदार के लिए बेचैन था।

मैरीलैंड, बाल्टीमोर, और वाशिंगटन के अलावा, दक्षिण वर्जीनिया, उत्तर वर्जीनिया, न्यूयॉर्क, फिलाडेल्फिया, लॉस एंजिलिस, शिकागो, ह्यूस्टन, डेट्रॉइट, और अन्य स्थानों से जमाअतों के सदस्य पहुंचे थे। इसके अलावा, मेक्सिको और प्यूर्टो रिको से भी लोग अपने प्यारे आका के स्वागत के लिए आए थे। कई जमाअतों और क्षेत्रों से लोग लंबी यात्राएं करके यहां पहुंचे थे, जैसे मियामी से 1078 मील, तुलसा से 1220 मील, ह्यूस्टन से 1422 मील और लॉस एंजिलिस से 2653 मील की दूरी तय करके लोग पहुंचे थे।

इसके अलावा, कनाडा, ब्रिटेन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, और अन्य देशों से भी लोग हज़ूर-ए-अनवर की आमद के इंतजार में थे। इनमें से कई लोग ऐसे थे, जिन्होंने पहली बार हज़ूर-ए-अनवर को नजदीक से देखने का मौका पाया। एम.टी.ए (MTA) के कैमरे इस पूरे स्वागत के दृश्य को रिकॉर्ड कर रहे थे।

अंततः वह बर्बरकत और यादगार लम्हा आ गया जब ठीक 4:30 बजे हज़ूर-ए-अनवर की गाड़ी मुख्य गेट से अंदर दाखिल हुई। हज़ूर-ए-अनवर गाड़ी से नीचे उतर आए और अपने हाथ ऊंचा करके सबको "अस्सलामो अलैकुम" कहा। दूसरी तरफ, हर मर्द, औरत, बच्चे, और बुज़ुर्ग ने उत्साह से अपने हाथ उठाए। लोग लगातार बड़े जोशीले अंदाज़ में नारे लगा रहे थे। चारों तरफ से "अस्सलामो अलैकुम हज़ूर" की आवाजें गूंज रही थीं। बच्चे-बच्चियां समूहों में स्वागत गीत गा रहे थे। हज़ूर-ए-अनवर, भीड़ के बीच से गुजरते हुए, अपने हाथ ऊंचा करके उनके नारों और सलाम का उत्तर दे रहे थे। वहां खुशी और मोहब्बत का माहौल था, और इश्क़ और फिदाइयत की नई कहानियां लिखी जा रही थीं।

सुबह 11 बजे हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़ ने दुआ कराई और सभी को "अस्सलामु अलैकुम" कहा। इसके बाद क़ाफ़िला डलास (Dallas) के इंटरनेशनल एयरपोर्ट फोर्ट वर्थ के लिए रवाना हुआ।

जमाअत-ए-अहमदिया अमेरिका ने आज की इस यात्रा के लिए भी American Airlines के एक चार्टर्ड विमान ERJ175 का इंतजाम किया था। हज़ूर-ए-अनवर की आमद से पहले सभी यात्रियों का सामान विमान में लोड किया जा चुका था। यात्रा करने वालों की संख्या 69 थी, जिनमें हज़ूर-ए-अनवर, अय्यदहुल्लाहु त'आला बिनस्रिहिल-अज़ीज़, हज़रत बेगम साहिबा, और क़ाफ़िले के अन्य सदस्य शामिल थे। इसके अलावा, श्रीमान अमीर साहिब जमाअत-ए-अहमदिया यूएसए, श्रीमान डॉक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब, श्रीमान वसीम मलिक साहिब और श्रीमान अज़हर हनीफ़ साहिब (नायब अमीर और अमेरिका के मौलवी इंचार्ज) भी इस विमान में सवार थे।

इस यात्रा में इंतिसार मलही साहिब (नायब सदर ख़ुद्दामुल् अहमदिया अमेरिका), डॉक्टर फ़ैज़ान अब्दुल्लाह (चेयरमैन मेडिकल एसोसिएशन यूएसए), श्रीमान मुन्निम नईम साहिब (चेयरमैन ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट अमेरिका), और श्रीमान शरीफ़ ओउदा साहिब (अमीर जमाअत कबाबीर) भी शामिल थे। इसके अलावा, डॉक्टर तनवीर अहमद साहिब (ड्यूटी डॉक्टर) भी साथ यात्रा कर रहे थे।

महिला प्रतिनिधियों में अम्मत-उल-मुसव्वर साहिबा और नक़ाशा अहमद साहिबा (मजलिस-ए-आमला लजना इमाइल्लाह अमेरिका) थीं। साथ ही, विभिन्न जमाअतों के अध्यक्ष, अन्य पदाधिकारी, राष्ट्रीय आमला के कुछ सचिव, और मौलवी साहिबान भी इस यात्रा में शामिल थे। American Airlines के एरिक अडूचियो इस यात्रा के कोऑर्डिनेटर थे।

शेष पृष्ठ 6 पर

घोषणा: ड्राइवर पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं - सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

शर्तें:

1. उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम होनी चाहिए।
2. उम्मीदवार के पास कम से कम दसवीं कक्षा पास होना आवश्यक है।
3. उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना आवश्यक है।
4. उम्मीदवार के लिए किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव होना आवश्यक है। इसके अलावा, अपनी आवेदन के साथ उस संस्थान का अनुभव प्रमाणपत्र भी प्रस्तुत करना आवश्यक है जहां उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।
5. उम्मीदवार को अपना जन्म प्रमाणपत्र जमा करना होगा।
6. उम्मीदवार को लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना आवश्यक है।
7. लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग टेस्ट भी लिया जाएगा।
8. उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल कादियान से चिकित्सा फिटनेस प्रमाणपत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।
9. चयनित ड्राइवर को नियुक्ति के बाद दूसरे श्रेणी के बराबर भत्ते और अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।
10. चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को कादियान में प्रारंभिक पांच वर्षों तक अपनी आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
11. उम्मीदवार के यात्रा खर्च (आवागमन) स्वयं करेगा।

नोट: लिखित परीक्षा, साक्षात्कार और ड्राइविंग टेस्ट की तारीख के बारे में उम्मीदवारों को बाद में सूचित किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
नज़रात दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान, पिन कोड: 143516
मोबाइल: 09888232530, 09682627592
दफ़्तर: 01872-501130
ई-मेल: diwan@qadian.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad